

अथ—पं० श्रीवलभद्र मिश्र कृता मन्त्रार्थवोधिनी मिथिलाभाषाटीकासमलङ्कृता।

वाजसनेयिविबाहचतुर्थीकर्म्मपद्धतिः प्रारभ्यते ।

❀ भूमिका ❀

प्रिय मैथिल बन्धुगण ? मिथिला में कर्म्मकाण्डक शिक्षा सरल प्रकारें सतत रहनहुं मन्त्रार्थक कठिनताक हेतु साधारणलोक में मन्त्रार्थज्ञान नहिं रहने (ज़लीय रैवाक) सभान जनता सकल संस्कार कर्म्म कें व्यर्थजानि अभक्ति दृष्टि सँ देखैत एक लीला बुझैत छथि। जनता में मन्त्रार्थज्ञानक परमावश्यकता जानि (स्वर्गीयज्येष्ठरजौराधीश बाबू छत्रनाथ चौधरी) क आज्ञा सँ (मन्त्रार्थबोधिनी) नामक सरल मिथिलाभाषाटीकालंकृत अनेक सन्दिग्ध स्थानमें (गूढ़ार्थप्रकाशिका) टिप्पणी युक्त वाजसनेयिविवाहचतुर्थीकर्म्म पद्धति सम्पूर्ण भय उक्त श्रीमानक असामयिक स्वर्ग बास भेनें अनाथभय एहि पद्धतिक प्रकाश किच्छु दिन स्थगित रहल। पुनः स्वनामधन्य मिथिलाभूषण मैथिलजीवन धर्म्मधुरीण कलानन्दकुलकमल वनैलीराजकुमार श्रीरमानन्दसिंहबहादुरक असीम कृपासँ प्रकाश भय साधारणलोकोपकारक हेतु अपनें लोकनिक सेवा में देश कें प्रेमोपहार समर्प्पणभेल अछि। आशा करैत छी जे जाति देशक गौरव रक्षक साधारण मैथिल पुरोहित वर्ग तथा निजदेशाभिमानी सज्जनवृन्द एहि पद्धति सँ मनोभिलषित लाभ कय पुनः द्वितीयावृत्ति प्रकाशक हेतु उत्साहित करताह। एहि में जतय जे त्रुटि अछि से गुणग्राही सज्जन वर्ग सँ सूचन भेनें पुनः द्वितीयावृत्ति में ठीक भय जाएत। मति वैकल्यात् कण्टकादि दोषात् जे कतहु त्रुटि अछि से शुद्धि पत्र देखि सज्जन लोकनि शुद्ध कय लेताह।

प्रार्थी—श्रीबलभद्र मिश्रः।

श्री गणेशाय नमः ।। वाजसनेयीक बिवाहपद्धति लिखैतछी (१) दशो संस्कार में पांहने विवाह लिखैत छी । (२) कन्याक हाथ सँ सोलह (१६) हाथ नापल माड़व-ताहि सँ दक्षिण पश्चिम दिश-माड़बक लगहिं उत्तर मूहें कोबर-माड़व सँ बाहार ईशान कोण में बरक हाथ सँ चारि हाथ नापल वालु भूसा केशअँ।कड़ इत्यादि नहिं रहैक एहि तरहक स्थानमें बाँशक बेदी बनावथि ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ बाजसनेयीनाम्विवाह पद्धतिः ॥ (१) तत्रादौ बिवाहः (२) ततः कन्या हस्तेन षोड़श हस्त परिमित मण्डपन्तद्दक्षिण दिशि मश्चिमान्दिशमाश्रित्य मण्डपसंलग्नमुत्तराभिमुखं कौतुकागारम्मण्डपाद्बहिरैशान्यां जामातृ चतुर्हस्तमित सिकतादि परिःकृतान्तुषकेश शर्करादि शून्याम्बेणु निर्म्मिताम्वेदीञ्चकारयेत् । (३) विवाहदिने कृत नित्य क्रियेण जामातृ पित्रा मातृका पूजापूर्वकमाभ्युदयिकंकर्त्तव्यम् ॥ कन्यापिताच स्नातः शुचिः शुक्लाम्बर धरः कृतनित्य क्रियो मातृका पूजाम्युदयिके कृत्वा अर्हणा बेलायां पूगयज्ञोपबीतादि दानम् (५) दाता पश्चिमाभिमुखः पूर्वाभिमुखाय बराय डल्लके पूगचन्दन दूर्वाक्षत यज्ञोपबीत बस्त्राण्यादाय (६) श्रों तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते

(२) बरक पिता विवाहक दिन नित्य कर्म्म कय मातृका पूजा ओ आभ्युदयिक श्राद्ध करथि (४) कन्याक पिता स्नान कय पवित्र भय शुक्ल वस्त्र पहिरि नित्य कर्म्म कय पहिले मातृका पूजा तखन आभ्युदयिक श्राद्ध कयकें अर्हणाबेला (वरक पूजाक समय) में सुपारी यज्ञोपवीत इत्यादि दान करथि । (५) दाता पश्चिम मुंहें ठाढ़ भय-पूबमूह सें ठाढ़ भेल बरकें एक डाला मे सुपारी चानन दूबि अक्षत यज्ञोपवीत बस्त्र लय कें (६) हे श्रेष्ठ ? स्नान कैने पवित्र जे हम पिता से ताहि काल मे अग्नि केर समीप मे स्नानादि सँ पवित्र

विवाह रत्नम् ।

निरोग पाखण्डशून्य पुण्यात्मा पुरूष एहेन अपनें कें श्री अमुकदेवीनामक कन्यादेव। ई मन्त्र पढ़ि सव वस्तु दय देथिन॥ (१) तखन वर हे मनोरथ सिद्ध कनेहार दूवि अक्षत? अपनें हमरा में वस्त्रादिऋतुजकां सुखदेनहार तथा सत्य पदार्थ कें; या यज्ञ कें वढौगहार सब ऋतु में रहनहार घृत तथा मधु कें प्रसव कनेहार अत्यन्त तेजस्वी सब कामना सिद्ध कनेहार अविनाशी भय कें रहूं। (२) एहिमन्त्र सँ दूर्वा अक्षत इत्यादि लयअपन माँथपर देथि धोती पहिरथि॥ ई पूगादि दान समाप्त भेल॥ ❊ ॥ ३ तखन व्यवहार स आठ ब्राह्मण उखरि में धान दय तीनि बेरि सहस्रशीर्षा इत्यादि सोलह मन्त्र पढ़ि समाठ (मुसर) सँ

ह्यरोगिणि। अव्यङ्गे ऽपतिते ऽक्लीबे पितातुभ्यम्प्रास्यति श्री अमुक देवी नाम्नीङ्कयाभ् इतिपठित्वो पनयेत्॥ (१) ततो वरः
(१) ॐ ओं ऋतवस्थ ऋतावृध ऋतुष्ठास्थ ऋतावृधः। घृतश्चूतो मधुश्चूतो बिराजोनाम कामदुधा अक्षोयमाणाः (२) इतिमन्त्रेण दुर्वाक्षतादिकङ्ग
हित्वा शिरसि निदध्यात् वस्त्रादिकम्बरः परिदध्यात्॥ इति पूगादिदानम्॥ (३) तत आचारदष्टौ ब्राह्मणा उदूखले धान्यन्दत्वा त्रिःसहस्र-
शीर्षेत्यादिषोड़श मन्त्रान् पठित्वा मुसलेन त्रिरवहत्य तदक्षतादिकमादाय दधियुक्तं कृत्वा आम्रपत्रे निधायवरकरमूलेकङ्कणम्बन्धयेयुः। (४)
अन्यानपि ग्राम्यव्यवहारान् कुर्यात् ❊ ॥ ततो मण्डपे प्रत्यङमुख आचम्योत्तिष्ठन् प्राङमुखम्वरमूर्ध्वजानुं सम्बोध्य (५)
ओं साधुभवानास्तामर्च्चयिष्यामो भवन्तभ्॥ इतिब्रूयात्

तीनि बेरि चोट दय ताहिसँ अक्षत इत्यादि लय दही मिलाय आमक पात मै दय वरक हाथ में कंकण वान्हि देथिन। (४) आनो सव ग्रामीण व्यवहार कैल जाएन॥ तखन माँड़व पर दाता पच्छिम मूँह भय आचमन कय कें ठाढ़ भय पूव मूहे उपर ठेंहुन कय वैसल वरकें सम्बोध करथि (५) अपने सज्जन थिकहुं तें हेतु हम अपनेक पूजा करव। ई वाजथि

(१) पूजा कैलजाय ई वरक बजलाक बाद वरके बैसवाक हेतु शुद्ध आसन दय हाथ में विष्टर लय विष्टर विष्टर विष्टर ई आनक वजलाक वाद (२) विष्टर लेलजावो ई यजमान वाजथि तखन (३) हम विष्टर लैतछी वर ई कथा वाजि हाथ में विष्टर लय (४) उदय शाली (चन्द्रमा सूर्य्य तारागणक) आच्छादक याही तरहें सूर्य्य थिकथि ताही तरहें हम समान जातीय लोकनिक आच्छादक (श्रेष्ठ) थिकहुं आओर जे कियो हमरा में हिंसाक बुद्धि राखैत छथि हुनका ई विष्टर रुप कल्पना कय पाएर तर चांपि कें वैसैत छी (५) ई मन्त्र पढि आसन पर उत्तर अग्र कें विष्टर राखि

(१) ओम् अर्च्चय इतिवरेणोक्ते वरोपवेशनार्थं शुद्धमासनन्दत्वा विष्टरमादाय विष्टरो विष्टरो विष्टर इत्यन्येनोक्ते (२) ओम् विष्टरः प्रतिगृह्यताम् इतियजमानेनोक्ते (३) ओम् विष्टरम्प्रतिगृह्णामि इत्यभिधाय पाणौगृहीत्वा (४) ओम् वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यता मिवसूर्य्यः इमन्तमभितिष्ठामि योमाकश्चाभिदाशति ॥ (५) इत्यनेनासने उत्तराग्रविष्टरोपरि वरउपविशति। तत उपविश्य यजमानः पाद्यमञ्जलिमादाय पाद्यम्पाद्यम्पाद्यमित्यन्येनोक्ते (६) ओम् पाद्यम्प्रतिगृह्यताम् इति वदेत् (७) ओम् पाद्यम्प्रति गृह्णामि इति-बरोऽभिधाय यजमानाञ्जलितोऽञ्जलिना पाद्यमादाय (८) ओम् विराजोदोहोऽसि विराजोदोह मशीयमयि पाद्यायै बिराजोदोहः इति दक्षिणपाद म्प्रक्षालयति (९) अनेनैवक्रमेणानेनैव मन्त्रेण वाम पादम्प्रक्षालयेत्

ताहिपर वर वैसथि ॥ तखन यजमान वैसिकें अर्घीं मे पाएर धोवाक जल दय हाथ में लयकें पाएर धोवाक जल दिऔन ई आनक कहनें (६) पाएर धोवाक जल लेलजावो ई वाजथि (७) हम पाएर धोवाक जल लैतछी ई कथा वरवाजि यजमानक हाथ सँ जल लय मन्त्र पढ़थि (८) हे जल? अहां अत्यन्त शोभाकें पूर्ण कैनहार थिकहुं अहां के हम ग्रहण करैत छी अहां हमर पाएर धोवाक निमित्तहोउ। एहि मन्त्र सँ दहिन पाएर धुआवथि (९) एहि क्रमें एहि मन्त्रें बाम पाएर धुआवथि

तखन पहिनहिं जकाँ आन विष्टर लय ताही क्रम सँ पाएर केरनीचाँ उत्तर अग्र कें राखथि (२) तखन दूवि अक्षत फूल चानन जल सहित अर्घपात्र हाथ में लय कें यजमान-अर्घ दिऔन्हि ई आनक कहलाक वाद (३) अर्घ लेल जावो ई बाजथि (४) तखन वर हम अर्घ लैत छी-ई वाजि यजमानक हाथ सँ अर्घ लय (५) अहाँ जल थिकहुं अहाँ स गृहीत हम सव मनोरथ लाभ करव। एहि मन्त्र सँ किञ्चित् अक्षत आदि लय कें माथ

ततः पूर्ववद्विष्टरान्तरङ्गृहीत्वा पूर्वोक्त क्रमेणैव चरणयोरधस्ता दुत्तराग्रम्वरोददद्यात् ॥ (२) ततो दूर्वाक्षतफलचन्दन जलयुतार्घपात्रं गृहीत्वा यजमानोऽर्घोऽर्घोऽर्घ इत्यन्येनोक्ते (३) ओम् अर्घः प्रतिगृह्यताम् इतिबदेत् (४) ततो बरः ओम् अर्घम्प्रति गृह्णामि इत्यभिधाय यजमान हस्तादर्घं गृहीत्वा (५) ओम् आपःस्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि। इति शिरसि किञ्चिदक्षतादिकन्दत्वा (६) ओम् समुद्रम्वः प्रहिणोमि स्वाय्योंनिमभिगच्छत अरिष्टास्माकम्वीरा मापरासेचिमत्पयः (७) इत्यर्घपात्रस्थजलमैशान्यान्त्यजन् पठति। ततो यज़मान आचमनीयमादाय (८) आचमनीयमाचमनीयमाचमानीय मित्यन्येनोक्ते। ओम् आचमनीयम्प्रतिगृह्यताम् इतिबदेत्

पर देथि। तखन (६) हे जल अहँ कें हम समुद्र पठावैत छी अपन जन्मस्थान समुद्र में जाउ अपनें हमर अशुभ नाश कैनहार थिकहुं किन्तु हमर पीवाक योग जल एतहि रहु सें नहिं जाउ (७) एहि मन्त्र सँ अर्घीक जल ईशान कोण में हेड़ावथि। तखन यजमान आचमनीय लयकें (८) आचमन करवाक जल देल जावोन ई आनक कहनें। आचमन करवाक जल लेल जावो ई वाजथि॥

वा० विवाह रत्नम्

... ई वर वाजि के यजमानक हाथ सँ आचमन करवाक जल लय (२) हे जल ! एहि आचमन सँ अपने हमरा यशस्वी तेजस्वी लोकप्रिय ओ गाय सँ पूरित हमर शरीर निरोग वनाउ। एहिमन्त्र सँ एक बेरि आचमन करथि दूइ बेरि विना मन्त्रहिं (३) तखन यजमान काँशाक थारी मे दही मधु घृत दय काँशाक थारी सं झांपि मधुपर्क लय कें मधुपर्क दिऔन ई आनक कहनें (४) अपने मधुपर्क लेलजावो। ई बाजथि। तखन

(१) ओम् आचमनीयम्प्रतिगृह्णामि इति वरोऽभिधाय यजमानहस्तादाचमनीयङ्गृहीत्वा (२) ओम् आमागन्य शसासऽ सृजवर्चसा तम्माकुरु प्रियम्प्रजानामधिपतिम्पशूनामरिष्टन्तनूनाम् ॥ इत्यनेन सकृदाचामति द्विस्तूष्णीम् । (३) ततो यजमानः कांश्यपात्रस्थ दधि मधु घृतानि कांश्य-पात्रपिहितानि मधुपर्कमादाय मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्क इत्यन्येनोक्ते (४) ओम् मधुपर्कःप्रतिगृह्यताम् इति वदेत् । ततो वरः ओम् मधुपर्कम्प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय (५) ओम् मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रतीक्षे इति दातृकरस्थमेव निरीक्ष्य (६) ओम् देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्वि-नोर्बाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम्प्रतिगृह्णामि । इति मधुपर्कं गृहीत्वा वाम हस्ते कृत्वा (७) ओम् नमः श्यावास्यायान्यशने यत्त आविद्धन्तत्ते निः कृन्तामि इत्यनामिकया प्रदक्षिणमालोडयानामिकाङ्गुष्ठाभ्याम्भूमौकिञ्चिन्निःक्षिपेत् पुनस्तथैव द्विःप्रत्येकं क्षिपेत्

वर हम मधुपर्क लैतछी ई वाजथि। तखन (५) हेमधुपर्क ! हमसूर्य्यक देल आँखि सँ अहाँ कें देखैतछी ! एहिमन्त्र सँ दाता क हाथहि में देखि कें (६) हेमधुपर्क ! दीप्यमान- सूर्य्यक आज्ञापावि अश्विनीकुमार तथा सूर्य्यक देल हाथ सँ अहाँ कें हम ग्रहण करैत छी एहि मन्त्र सं मधुपर्क लय वांम हाथ में राखि (७) हे ग्रणम्य ! अहां कें हम मिलावैत छी किन्तु अहां कें भोजन करवा में जे अधलाह वस्तु अछि तकरा हम फराक करैत छी ॥ एहि मन्त्रें अनामिका सँ प्रदक्षिणक्रमें मिलाय अनामिका और अङ्गुष्ठ सँ भूमि में थोड़ेक फेकथि फेरु ताही तरहें दूइ बेरि फेकथि ॥

तखन (१) मधु केर जे उत्तम मधुरुप तकरा उत्तम मधुरशील अन्न खैनहार हम अन्न जकाँ भोजन करैत छी (२) एहि मन्त्रें वर तीनिवेरि मधुपर्क प्राशन करथि सबबेरि मन्त्रपढ़थि (५) तखन शेषमधुपर्क कें निर्जनस्थान में राखथि। तखन आचमन कय (४) हमरा मुहमें वचनहो-एहि मन्त्रें मुह छुवथि (५) हमर दूनू नाक में प्राणवायु होथि एहि मन्त्रें नाक छुवथि (६) हमर दूनू आंखि में तेजहो एहि मन्त्रें दूनू आंखिछुवथि (७) हमर दूनू कान में कर्णेन्द्रिय

ततः (१) ओम् यन्मधुनो मधव्यम्परमꣳ रुपमन्नाद्यन्तेनाहम्मधुनो मधव्येन परमेण रुपेण अन्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि (२) इति वारत्रयम्मधुपर्कम्वरः प्राश्नाति प्रतिप्राशनम्मन्त्रपाठः। (३) ततो मधुपर्क शेषमसञ्चरदेशे धारयेत्। तत आचम्य (४) ओम् वाङ्म आस्येऽस्तु इत्यास्यम्। (५) ओम् नसोर्म्मे प्राणोऽस्तु इति नासापुटे (६) ओम् अक्ष्णोर्म्मे चक्षुरस्तु इति चक्षुषी॥ (७) ओम् कर्णयोर्म्मे श्रोत्रमस्तु इति कर्णौ (८) ओम् बह्वोर्म्मे बलमस्तु इत्यंसौ [९] ओम् ऊर्वोर्म्मे ओजोऽस्तु इत्यूरु [१०] ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु इति सर्वगात्राणि स्पृष्ट्वा। [११] नापितेन वराञ्जलौ तृणमेकन्दत्वा गौर्गौर्गौरित्यभिहिते वरः [१२] ओम् मातारुद्राणान्दुहिता वसूनाꣳ स्वसा

हो एहि मन्त्रें दूनू कान छुवथि (८) हमर दूनूवांहु में वलहो एहिमन्त्रें दोनो वांहु छुवथि (९) हमर दूनू जांघमें बलहो-एहि मन्त्रें दूनू जांघ छुवथि (१०) हाथ पाएर इत्यादि सब अवयवक सङ्ग हमर शरीर निरोग हो-एहि मन्त्रें सब शरीर छुवथि। (११) नापित वरक हाथ में गायकेर खैवाक हेतु घास दय-गाय गाय गाय कहलाक वाद वर मन्त्र पढ़थि (१२) गायकेर सेवा कैनहार लोक सवहिं कें हम प्रार्थना सँ फेरु कहैत छिऐन्हि जे रुद्रगणक मांय वसुगणक कन्या सूर्य्यक वहिन

(१) घृतक जन्मस्थान ककरो हिंसा नहिं कैनिहारि निरपराधिनी गायकें किओ कदापि नहिं मारी-हेगाय ! हमर ओ पूजा कैनहारक ओ अमुक नामक यजमानक पाप कें नाश करू-गाय कँ छाड़ि दिऔन घास खाथु (२) एहि मन्त्र सँ घास कें काटि-गायके देथिन्ह तखन गाय कें खोलि देथिन्ह (३) तखन भूसा केश अँकड़ इत्यादि अशुद्ध वस्तु नहिं रहैक एहि तरहक बेदी में एक हाथ नापल सरि भूमि कें कुश सँ वाढि ताहि कुश कें ईशान काण में छाड़ि गोवर जल सँ नीपि स्रुव केर मूल सँ वा स्फ्य (एक हाथ खाएरक वनाओल शला का) सं

दित्यानाममृतस्य नाभिः। प्रनुवोचश्चिकितुषे जनाय मागामनागा मदितिम्बधिष्ट ममचामुष्यचामुक शर्म्मणोयजमानस्य पापमाहतः ओमुत्सृजत तृणान्यत्तु (२) इति मन्त्रेण तृणं छित्वागामुत्सृजेत् (३) ततो बेदिकायान्तुष केश शर्क्करादि शून्यायां हस्तमात्र परिमित चतुरस्रां भूमिङ्कुशैःपरिसमुह्य तान कुशानैशान्याम्परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य श्रुवमूलेन स्फ्येन वोत्तरोत्तरक्रमेण प्रादेशमात्रन्त्रि-रुल्लिख्योल्लेखनक्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्याम्मृदमुद्धृत्यजलेना भ्युदय तत्र तूष्णीं कांश्यपात्रस्थमग्निम्प्रत्यङमुखमुपसमाधाय तद्रक्षार्थं किञ्चिन्नियुज्य कौतुकागाराद्वरःकन्यामानीय मण्डपे (४) ओम् जराङ्गच्छपरिधत्स्ववासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा शतञ्च जीवशरदः सुबर्च्चारयिञ्च पुत्रोननु सम्व्ययस्वायुष्मतीदम्परिधत्स्ववासः। इति पठित्वा परिधानवस्त्रन्तस्यैदद्यात् ॥

उत्तर उत्तर क्रमें प्रादेश मात्र तीनिटा रेखा कय रेखाक क्रम सँ अनामिका ओ आंगुठ सँ मांटि फेकि जल सँ सिक्त कय ताहि ठाम विना मन्त्रहिं काँशाक थारो सँ अग्नि कें पश्चिम मुहें राखि हुनक रक्षाक हेतु किच्छुद्य कोवराक घर सं कन्या कें आनि तखन वर मन्त्र पढथि (४) हे चिरजीविनि ? अहां अधिक दिन जीवू बस्त्र पहिरू मनोहारिणी होउ सुन्दर तेज वाली अँहां शय वर्ष जीवू धन ओ पुत्र वढ़ाउ एहि सब कें प्राप्त करवाक हेतु ई वस्त्र पहिरु ॥ ई मन्त्र पढिकें पहिरवाक वस्त्र कन्या कें देथिन्ह ॥

(१) हे चिरजीविनि ! जेपरमेश्वरी सूत कटलन्हि वा जे उत्पन्न कैलन्हि ओ विस्तार कैलन्हि से देवी अहाँ कें पहिरावथु तकरा कें अहाँ दीर्घायु हेवाक हेतु अपना हाथें पसारि कें पहिरु। एहि मन्त्रें उत्तरीय वस्त्र (ओढ़नी) कन्या कें देथिन्ह॥ (२) हम वस्त्र पहिरव ताहि सँ यशस्वी होएव ओ शय वर्ष जीव अधिक धन हो तें हेतु हम वस्त्र पहिरैत छी-ई मन्त्र पढ़ि वर अपने धोती पहिरथि॥ (३) यश स आकाश पृथिवी ओ इन्द्र वृहस्पति हिनका लोकनि कें अच्छादन नहिं करथि-यश ओ ऐश्वर्य्य सौभाग्य हमरा लाभ हो। ई मन्त्र पढि अपनहुं उत्तरीय वस्त्र धारण करथि॥

(१) ओ् याअकृन्तन्नवयन्या अतन्वत याश्चदेवीस्तनूनभितोततन्थ। तास्त्वादेवीर्ज्जरसे सम्व्ययस्वायुष्मतीदम्परिधत्स्ववासः। इति उत्तरीय वस्त्रन्तस्यैदद्यात्॥ (२) ओम् परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टि रस्मि शतञ्च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभिसम्व्ययिष्ये। इति पठित्वा वरः स्वयम्परिधत्ते (३) ओम् यशसामाद्यावा पृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती यशोभगश्च-माविदद्यशोमाप्रतिपद्यताम्। इति पठित्वा उत्तरीयम्परि दधाति। ततो वरस्य कन्यायाश्च द्विराचमनम् (४) ततः कन्याप्रदेन ओम् परस्परं समञ्जेथाम् इति प्रैषानन्तरं कन्यावरयोः परस्पराभिमुखी करणम् (५) ओम् समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ सम्मातरिश्वा सन्धाता समु देष्ट्री दधातु नौ। इति वरः पठति॥ ततः कन्याप्रदकर्तृकं जन्मग्रन्थिवन्धनम्॥ अथ कन्यादानम्।

तखन वर ओ कन्या दूनू गोटें दूई वेरिकें आचमन करथि (४) तखन दाता -(अहाँ दूनू गोटें में स्नेह हो) ई कहलाक वाद तखन कन्या कें वर-ओ वर कें कन्या देखथि (५) विश्वेदेव हमरा दूनू गोटे क हृदय एक करथु-जल एक हो-तथा-देवता प्राण वायु दूनू गोटें कें धारण करथु-इच्छा ओ प्रजापति हमरां दूनू गोटे कें धारण करथु-इच्छा केनहार देवता (कामदेव) धारण करथु-तथा-देवता ओ जल हमरा दूनू गोटें कें सङ्गम करावथु-ई मन्त्र वर पढथि॥ तखन दाता जन्मगेंठ वान्हि देथिन्ह॥ आव कन्यादान॥

(१) दाता शंख में दूवि अक्षत सुपारी चानन जल लय जमाइक दहिन हाथ पर कन्याक दहिन हाथ राखि मंत्र पढथि (२) हम राजा वरुणक समान दाता थिकहुं एहि द्रव्यक देवता सूर्य्य थिकथि-विष्णुक रूप भय ई ब्राह्मण कन्या ग्रहण करथु ई विधि अछि! ई मन्त्र पढि आइ (राति के कन्यादान करी तँ ओम् अद्यां रात्रौ-आइ राति में एतवा उह करी) अमुक मास में अमुक पक्ष में अमुक तिथि में अमुक गोत्रक अमुक प्रवरक अमुक शर्म्माक प्रपौत्र कें अमुक गोत्रक अमुक प्रवरक अमुक शर्म्माक पौत्र कें अमुक गोत्रक अमुक प्रवरक अमुक शर्म्माक पुत्र कँ अमुक गोत्रक अमुक प्रवरक अमुक शर्म्माक प्रपौत्री अमुक गोत्रक अमुक प्रवरक अमुक शर्म्माक पौत्री अमुक गोत्रक अमुक प्रवरक अमुक शर्म्माक हमर पुत्री (अपन कन्या नहिं रहैन तँ मम उच्चारण नहिं करथि)

(१) दाता शंखस्थ दूर्वाक्षत फलचन्दन जलान्यादाय जामातृ दक्षिण करोपरि कन्यादक्षिण करन्निधाय (२) ओम् दाताहम्बरुणोराजा द्रव्यमादित्य दैवतम् । विप्रोसौ विष्णुरूपेणप्रतिगृह्णात्वयम्विधिः ॥ इति पठित्वा (३) ओम् अद्यामुक मासीयामुक पक्षीयामुक तिथावमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शर्म्मणः प्रपौत्राय अमुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शर्म्मणः पौत्राय अमुक-गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शर्म्मणः पुत्राय अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शर्म्मणः प्रपौत्रीं-अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शर्म्मणः पौत्रीं अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरश्यामुक शर्म्मणो ममपुत्रीं

अथ प्रवराध्यायः ॥ कात्यायनगोत्रस्य कात्यायनविष्णुङ्गिरसस्त्रय;प्रवराः । पराशरगोत्रस्यशक्तिवसिष्ठपराशरा स्त्रयःप्रवराः ॥ काश्यपगोत्रस्यकाश्यपावत्सारनैध्रुवास्त्रयः प्रवराः ॥ वत्स-गोत्रस्य और्व्वंच्यवनभार्गवजामदग्न्याप्लवानाः पञ्चप्रवराः ॥ सावर्ण्य गोत्रस्य और्व्वंच्यवनभार्ग वजामदग्न्याप्लवानाः पञ्चप्रवराः ॥ शाण्डिल्यगोत्रय शाण्डिल्यासितदेवलास्त्रयः प्रवराः ॥ भारद्वाज गोत्रस्य भारद्वाजांगिरसवार्हस्पत्या स्त्रयः प्रवराः ॥ गौतमगोत्रस्य अंगिरोवसिष्ठगार्हपत्यास्त्रयः प्रवराः ॥ गार्ग्यगोत्रस्य गार्ग्यघृतकौशिकमाण्डव्याथर्व्व वैशम्पायनाः पञ्चप्रवराः ॥ कौशिकगोत्रस्य कौशिकात्रिज-मदग्नयस्त्रयः प्रवराः ॥ कृष्णात्रेयगोत्रस्यकृष्ण त्रेयाप्लवानसारस्वतास्त्रयः प्रवराः ॥ वसिष्ठ गोत्रस्य वसिष्ठात्रिसांकृतयस्त्रयः प्रवराः ॥ कौण्डिन्यगोत्रस्य आरतीककौशिककौण्डिन्यास्त्रयः प्रवराः विष्णु वृद्धि-गोत्रस्य विष्णवृद्धिकौर पुच्छसत्यापास्त्रयः प्रवराः ॥ मौद्गल्यगोत्रस्य मौद्गल्यांगिरसवार्हस्पत्यास्त्रयः प्रवराः इति प्रवराध्यायः ॥ * ॥

एहि प्रकारें तोनि वेरि उच्चारण कय अमुक गोत्र अमुक प्रवर अमुक शर्म्म ब्राह्मण वर अपनें कें अमुक गोत्रक अमुक प्रवरक अमुक नामक प्रजापति देवताक अलङ्करण युक्ता ई कन्या स्वर्गक अभिलाषा सँ हम (कन्याक पिता यँ दान कैनहार नहि रहथि तँ दाता (कन्या पितृगत स्वर्गकामः) (एतवा उह करथि) स्त्रीक हेतु अहाँ कें दैत छी एहि प्रकारें दय देथिन्ह ॥ (२) हम स्वीकार कैल ई वर वाजथि। तखन वर मन्त्र पढथि (३) आकाश अहाँ कें देथु अर्थात् आकाश जाहि तरहें मेघादिक आश्रय भय वर्षा आदि सँ सकल जीव कें सुखी करैत छथि ताही तरहें अहाँ सब कें सुखी करु। पृथ्वी अहाँ कें ग्रहण करथु अर्थात् पृथ्वी जाहि तरहें सब सहि कें शस्यादि उत्पन्न करैत छथि ताहि तरहें अहाँ गुणवान सन्तान उत्पन्न करु ॥ (४) तखन दाता शंख में दूवि अक्षत

(१) एवन्त्रिरुच्चार्य्य-अमुक गोत्रायामुक प्रवरायामुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय वराय तुभ्यममुक गोत्राममुक प्रवराममुक नाम्नीमिमाङ्कन्यां सालङ्कारां प्रजापति दैवताम्पत्नीत्वेनाहं सम्प्रददे। इति दद्यात्। (२) ओम् स्वस्तीतिप्रतिवचनम्। ततो वरो मन्त्रम्पठेत् (३) ओम् द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु। (४) ततः कन्याप्रदः शंखस्थ दूर्वाक्षतफलचन्द-नजल दक्षिणाद्रव्यमादाय (५) ओम् अद्यकृतैतत्कन्यादानप्रतिष्ठार्थमिमं सुवर्णमग्निदैवत ममुकगोत्राया मुकप्रबरायामुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय वराय दक्षिणान्तु भ्यमहं सम्प्रददे। इतिदक्षिणान्दद्यात् ॥ ओम् स्वस्तीतिप्रतिवचनम्-गोमिथुनम्वा रुद्रदैवतन्दक्षि-णान्दद्यात् ॥ ततो बरो मन्त्रम्पठेत् (६) ओम् कोऽदात्कस्मा अदात् कामोऽदात कामायादात् कामोदाता कामः प्रति गृहीता कामैतत्ते ॥ (७) ततस्तास्पाणौगृहीत्वा ओम् यदैषि मनसा दूरन्दिशोऽनुपवमानो वा हिरण्यपर्णो वैकर्णः सत्वा मन्मनसाङ्करोतु श्री अमुकदेवि ?

सुपारीचाननजल दक्षिणाक द्रव्य लय कें (५) आयि ई कन्यादान रूप कर्म्म कैल अछि तें हेतु अग्नि देवताक ई सुवर्ण अमुक गोत्रक अमुक प्रवरक अमुक नामक ब्राह्मण वर अपनें कें दक्षिणा हम दैत छी। एहि तरहें दक्षिणा देथिन्ह ॥ तखन वर हम स्वीकार कैल ई कथा वाजथि रुद्र देवताक गाय वड़द दक्षिणा देथिन्ह तखन वर मन्त्र पढ़थि (६) के फकरा देलथिन्ह काम काम के देलथिन्ह काम देनहार काम लेनहार अतएव हे काम ! जे देल अछि वा जे लेल अछि सब अपनेक थिक ! तखन कन्याक हाथ पकड़ि कें हे अमुक देवि ! हम कतय जाइत छी के लय जाइत अछि ई विचारि जे अहाँ हमर मनसँ फराक होइत छी से पूब आदि दिशा तथा वायु सूर्य्य अग्नि ई लोकनि अहाँ कें हमर मनमें स्थिर करथु-

ईमन्त्र पढ़ैत एक दुइ डेग चलथि। (८) तखन वेदी सँ दक्षिण दिश में एक पुरुष अपन काँन्ह पर भरल घैल लय चुप भय अभिषेक पर्य्यन्त ठाढ़ रहथि (१) तखन अपना में अहाँ दुनू गोटें ताकू (अर्थात् परस्पर पसिन्द करू) इ कथा यजमान कन्या वरकें कहथिन्ह (तखन वर कन्या के देखि मन्त्र पढ़थि (२) हे सुन्दरि! मङ्गल दृष्टिवाली अहाँ स्वामी कें मारनिहारि जनु होइ पशु सबहिंक कल्याण कारिणी होउ-अधिक तेज धारण कैनिहारि अहाँ हमरा में प्रसन्न मनवाली होउ क्रोड़ाक अभिलाषा कैनिहारि अहाँ वलवान वालक प्रसव करू सुखपूर्व्वक रहि हमर प्रजालोकक कल्याण कारिणी होउ। पहिनें जन्म समय में अहाँ कें चन्द्रमा लाभ कैलन्हि तखन गन्धर्व तखन तेसर स्वामी अहाँक अग्नि भेलाह चारिम स्वामी हम भेल हुं (किन्तु) (एहिकाल में चारियो गोटाक स्त्री अहाँ नहिं थिकहुं)

इति बरः पठन्निः क्रामति॥ (१) ततो वेदि दक्षिणस्यांदिशि बारि पूर्ण दृढ़ कलश मूर्द्धन्तिष्ठतो मौनिनः पुरुषस्कन्धेऽभिषेक पर्य्यन्त-न्धारयेत। (२) ततः ओम् परस्परं समीक्षेथामितिकन्याप्रदप्रैषानन्तरम् (३) ओम् अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवापशुभ्यः सुमनाः सुवर्च्चाः। वीरसूर्देवकामास्योनाशन्नो भवद्विपदे। सोमः प्रथमो बिविदे गन्धर्वो बिविद उत्तरः। तृतीयोऽग्निष्टेपतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः सोमोऽददद-गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये रयिञ्च पुत्रांश्चादादग्निर्म्मह्यमथो इमाम्। सानः पूषा शिवतमा मैरय सान ऊरु उशती विहर यस्यामुसन्तः प्रहराम शेपम् यस्यामु कामा बहबो निविष्टयै (४) इति बरपठित मन्त्रान्ते परस्पर निरीक्षणम्॥ ततोऽग्निम्प्रदक्षिणीकृत्य पश्चादग्ने रहतबस्त्र वेष्टित तृणपूरकें कटे बा तदुपरि दक्षिणचरणन्दत्वा बधून्दक्षिणतः कृत्वा वर उपबिश्य पुःपचन्दन ताम्बूल बस्त्रा-ण्यादाय (५) ओम् अद्य (अस्यांरात्रौ वा) कर्त्तव्य बिवाहाङ्ग भूत होम कर्म्मणि कृताकृतावेक्षण रूप ब्रह्म कर्म कर्त्तुममुक

चन्द्रमा गन्धर्व कें देलथिन्ह गन्धर्व अग्निकें अग्नि धन पुत्र सहित ई स्त्री हमरा देलन्हि से ई वृद्धिकारिणी कल्याण कारिणी अहाँ हमरा त्याग नहिं करी-अहां कें अग्नि हमरा देलन्हि से कामयमाना अहाँ जाँघ पसारू कामी भय कें हम तांहि में लिङ्ग प्रहार करव किन्तु हमरा अंभिलाषा कें निहारि अहाँ में हमरा बहुत अभिलाषा स्थिर अछि (४) वर ई मन्त्र पढ़थि तखन वर कन्याकें तथा कन्या वरकें देखथि तखन अग्नि कें प्रदक्षिण कय अग्नि सँ पश्चात् उत्तम वस्त्र लपेटल खढ़क बीड़ी वा पटिया ताहिपर दहिन पाएर दय स्त्रीकें दहिन भाग कय बैसि फूल चानन पान वस्त्र लय (५) आयि करवाक जे विवाहक अङ्ग भूत होम कर्म्म तकरा में कैल बिनु कैल देखवरूप ब्रह्माक कर्म्म करवाक हेतु।

अमुक गोत्र अमुक शर्म्मा नामक ब्राह्मण अपने;कें एहि फूल चानन पान जज्ञोपवीत वस्त्र सँ ब्रह्माक हेतु वरण करैत छी। एहि तरहें ब्रह्माक वरण करथि। (२) हम वृत छी ई ब्रह्मा बाजथि (३) जे बिहित कर्म्म हो से कैल जावो ई बरक बजलाक वाद। हम करब ई ब्रह्माक कहलापर वर अग्नि सँ दक्षिण दिश शुद्ध आसन दय ताहि पर पूव अग्रकय कुश राखि ब्रह्मा कें अग्नि प्रदक्षिण क्रम आनि (४) अपनें एहि कर्म में हमर ब्रह्मा होउ वर ई कथा वाजि कें (५) हम ब्राह्मा होयब ई ब्रह्माक बजलाक वाद तखन बनाओल आसन पर ब्रह्मा कें बैसावथि॥ तखन प्राणीतापात्र आगाँ मेंराखि

(१) गोत्रमसुक शर्म्माणम्ब्राह्मणमेभिः पुःपचन्दनताम्बूलयज्ञोपवीत वासोभिर्ब्रह्मत्वेनत्वामहम्वृणे ॥ इति ब्रह्माणम्बृणुयात् (२) ओम् बृतोऽस्मीति प्रतिवचनम ॥ (३) ओम् यथा विहितं कर्म्म कुरु इति वरेणोक्ते । ओम् करवाणीति प्रतिवचनानन्तरं वरोऽग्नेर्द्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य्य ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय (४) ओम् अस्मिन् कर्म्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव इत्यभिधाय (५) ओम् भवानीतितेनोक्ते कल्पितासने-उपवेशयेत् ॥ ततः प्रणीतापात्रम्पुरतः कृत्वा वारिणापरिपूर्य्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ॥ (६) ततः परिस्तरणं बर्हिषश्चतुर्थ भागमादायाग्नेयादीशानान्तम्ब्रह्मणोऽग्निपर्य्यन्तन्नैऋत्याद्वायव्यान्तमग्नितः प्रणीतापर्य्यन्तम् ॥

जल सँ भरि कुश सँ झाँपि ब्रह्माक मुंह देखि अग्नि सँ उत्तर दिश कुश पर राखथि (६) तखन (परिस्तरण) कुश ओछावथि सोड़हटा कुश हाथ में लय-अग्निकोण सँ ईशान कोण पर्य्यन्त सातटा ब्रह्मा सँ अग्नि पर्यन्त एक टा नैऋत्य कोण सँ बायव्य कोण पर्य्यन्त सातटा अग्नि सँ प्रणीता पात्र पर्य्यन्त एक टा ॥

(१) तखन अग्नि सँ उत्तर भाग पश्चिम दिशा में तिनिटा कुश-पैता बनबाक हेतु छीपवाला गर्भहीन दूइ टा कुशक पात (बारह आँगुर दीर्घ) प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली बाढ़बाक कुश बेणीवनाओल उपयमन कुश तीनिटा आमक काठी श्रुव घृत दूइशय छप्पन (२५६) मुट्ठी आरव चाउर सँ भरल पात्र ब्रह्माक दक्षिणाक हेतु-ई सब पैता कटबाक कुश सँ पूब पूब दिश क्रमहिं राखथि (२) तखन ताही दिश में विशेष वस्तु सब राखथि । ताहिठाम शैन पलाश मिलाओल लावा पाथर कुमारिक भाय सूप बलवान् पुरुष आनो सब उपयोगी वस्तु राखथि (३) तखन पैता काटबाक कुश सँ अपन

(१) ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिम दिशि कुशत्रयंम्पवित्र करणार्थं साग्रमनन्तर गर्भि कुशपत्रद्वयम्प्रोक्षणीपात्र माज्यस्थाली सम्मार्ज्जनकुशाः बेणीरुपोपयमन कुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरमुष्टि शतद्वयावच्छिन्नामतण्डुल पूर्णपात्रं ब्रह्मदक्षिणार्थमेतानि पवित्र छेदन कुशानाम्पूर्वपूर्वदिशिक्रमेणासादनीयानि (२) अथ तस्यामेव दिश्यसाधारण वस्तू न्युपकल्पनीयानि तत्र शमी पलाश मिश्रालाजा दृषदुपलं कुमारी भ्रातासूर्पं दृढः पुरुषः अन्यदपितदुपयुक्तद्रव्यं (३) ततः पवित्र छेदन कुशैः स्वप्रादेश मित पवित्रं छित्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकन्त्रिःप्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रं पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुदिङ्गनम् (४) प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्प्रोक्षणी जलेनासादित वस्तु सेचनम् । ततोऽग्निप्रणीतयोर्म्मध्ये प्रोक्षणीपात्रन्निदध्यात् ।

प्रादेश नापल पैताकाटि पैता बनाय हाथ में लय प्रणीता पात्रक जल तीनि बेरि प्रोक्षणीपात्र में दय अनामिका तथा आंगुठ सँ उत्तर अग्रकैं पैता पकड़ि तीनि बेरि माँथ पर छिटथि (४) प्रणीतापात्रक जल सँ प्रोक्षणीपात्र सिक्तकय प्रोक्षणीपात्रक जल सँ राखल वस्तु सिक्त करथि ॥ तखन अग्नि ओ प्रणीतापात्रक मध्य में प्रोक्षणीपात्र केँ राखथि ।

(१) अष्ट मुष्टिर्भवेकुञ्चिः कुञ्चयोऽष्टौचच पुष्कलम् । पुष्कलानिच चत्वारि पूर्णपात्रम्प्रचक्षते ॥ एतदशक्तौ यावतान्नेन वहुभोक्तु स्तृप्तिर्भवति तावद्दद्यादिति कात्यायनः ! आठमुट्ठी चाउर केर ..ञ्चि होइत अछि, आठ कुञ्चि केर एक पुष्कल होइत अछि चारि पुष्कल केर एक पूर्ण पात्र होइत अछि ! तकर अभाव हो तँ यतवा अन्न सँ एक व्यक्ति केँ तृप्ति होइन्ह ततवो पूर्ण पात्र में दिऐक ई ..न केर मत छन्हि ॥

घृतक बाटी में घृत राखथि (२) तखन घृतक बाटी आगि पर सँ उतारथि। नवन प्रज्वलित काठी घृतक चारियो दिश बेष्टन (घुमाय) कें प्रदक्षिणक्रम सँ अग्नि में दय देथि। तखन स्रुव कें
आगि में सेदथि। वाढ़बाक कुशक अग्र सँ स्रुवक बाहर वाढ़ि (झाड़ि) प्रणीता पातक जल सँ स्रुव कें सिक्त कय फेरु तोनि बेरि आगि में सेदि स्रुव कें अपना सँ दक्षिण भाग में कुश पर
राखथि। (२) तखन घृत कें प्रदक्षिण क्रमें आगि पर सं हेठ कय प्रोक्षणी पातक जल जकां तीनि वेरि माथ पर सिक्त करथि। घृत कें देखि तं कोनो अधलाह वस्तु रहैक त सें वाहर कय देथिन्ह

(१) आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः (२): ततोऽधिश्रयणम्। ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेणपर्यग्नि करणम् ततः
श्रुवप्रतपनं कृत्वा सम्मार्जनकुशानामग्रै रन्तरतो मूलैर्बाह्यतःस्रुवंसम्मृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पनस्त्रिःप्रतप्य स्रुवं स्वदक्षिणतः कुशोपरि
(७) निदध्यात् (३) तत आज्यमग्नेः प्रदक्षिणक्रमेणावतार्य्याऽग्रे प्रोक्षणीवदुत्पवनम्। अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम् (४) पुनः
प्रोक्षण्युत्पवनम्। तत उपयमन कुशान् वामहस्तेनादाय प्रजापतिम्मनसाध्यात्वा उत्तिष्ठन् घृताक्ताः समिधस्तूष्णीमग्नौ क्षिपेत्
(५) तत उपविश्य प्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्नि पर्य्युक्षणं कृत्वा प्रणीतापात्रे पवित्रन्निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन
ब्राह्मणान्वारब्धः (६) समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात्। तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुत
शेषस्य घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः॥

(४). फेरु प्रीक्षणी पातक जल तीनि बेरि माँथपर छिटथि। तखन उपमयन कुश (वेणी) वाम हाथ में लय मन सँ प्रजापतिक ध्यान कय ठाढ़ भय घृत लगाओल काठी विना मन्त्रहिं अग्नि में
देथि (५) तखन बैसि कें प्रोक्षणीपातक जल सँ प्रदक्षिणक्रमें अग्नि कें वेष्टन कय प्रणीतापात्र में पैता राखि दहिन जांघ खसाय कुश सँ ब्रह्माक स्पर्श करथि। स्रुव सँ घृत लय प्रज्वलित
(धधकल) आगि में होम करथि। ताहिठाम आघार सँ बारह आहुति पर्य्यन्त प्रत्येक आहुतिक बाद हवन सँ शेष घृत प्रोक्षणोपात्र में प्रक्षेप करथि॥

(१) प्रजापतिक निमित्त होम करैत छी-ई घृत प्रजापतिकें प्राप्ति होन्हि। इन्द्रक निमित्त होम करैत छी-ई घृत इन्द्रकें प्राप्ति होन्हि। ई दूनू आघार नामक होम भेल (२) अग्निक निमित्त होम करैत छी-ई घृत अग्नि के प्राप्ति होन्हि। चन्द्रमाक निमित्त होम करैतछी-ई घृत चन्द्रमा कें प्राप्ति होन्हि-ई घृत भाग होम भेल (३) भूलोकक निमित्त हवन करैत छी-ई घृत भूलोक कें प्राप्ति होन्हि। भुवर्लोकक निमित्त हवन करैत छी-ई घृत भुवर्लोक कें प्राप्ति होन्हि। स्वर्लोकक हेतु हवन करैत छी-ई घृत स्वर्लोककें प्राप्ति होन्हि। ई सब महाव्याहृति होम भेल ॥ (४) हे अग्नि ! अपनें हमर कर्म्म केर साक्षी थिकहु सब जानैत छी तें हेतु एहि कर्म्म में न्यूनाधिक दोष सँ जे देवता वरुण कें हमरा प्रति क्रोध भेल छौन्हि ताहि क्रोध कें अपनें शान्त करिऔन्हि आवोर सब संसारमय ओ यज्ञ में श्रेष्ठ तथा हवन

(१) ओम् प्रजापतये स्वाहा इदम्प्रजापतये। ओम् इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय। इन्याघारौ (२) ओम् अग्नये स्वाहा इदमग्नये। ओम् सोमाय स्वाहा इदं सोमाय इत्याज्यभागौ (३) ओम् भूः स्वाहा इदम्भूः। ओम् भुवः स्वाहा इदम्भुवः। ओम् स्वःस्वाहा इदं स्वः॥ एता महाव्याहृतयः (४) ओम् त्वन्नोअग्ने वरुणस्यविद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाऽंसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा-इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ (५) ओम् सत्वन्नोअग्ने ऽवमो भवोतीने दिष्टो अस्या उषसो व्युष्टौ अवयक्ष्वनो वरुणऽंरराणो वीहिमृडीकऽं सुहवोन एधिस्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम् (६) ओम् अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्तिपाश्चसत्व-मित्वमयाअसिअयानो यज्ञस्वहास्य यानो धेहि भेषजऽं स्वाहा-इदमग्नये

लेवा में श्रेष्ठ ओ अति सें तेजस्वी अपनें हमर दुर्भाग्य केर सेहो नाश करू तें हेतु ई घृत अपने कें ओ राजा वरुण कें दैत छी॥ (५) हे अग्नि ! सततपालन करवा में सावधान तथा शूर जे अपनें से एहि ठाम आवि एहि काल में हमर रक्षा करु तथा राजा वरुण कें प्रसन्न करू हमर देल आहुति ग्रहण करू घृतादि हवि भोजन करू तें हेतु ई घृत अपनें कें तथा राजा वरुण कें दैतछी॥ (६) हे अग्नि ! जे व्यक्ति अपनें सँ रक्षाक प्रार्थना नहिं करैत छथि हुनको अपनें रक्षा करैतछी तथा सब प्राणीकेर शुभ कैनहार थिकहुं तें हेतु अपने आउ आविकें हमर आहुति ग्रहण करू तथा देवता सबकें ई आहुति प्राप्ति कराउ अपनें सत्य काँ जानन हार थिकहुं संसार सं उद्धार केर उपाय जानैत छी हमरा में सब वस्तु औषध हो तें हेतु ईघृत अपनें कें दैतछी।

(१) हे बरुण.! अपनेंक जे यज्ञसम्बन्धो सबलोक में व्याप्त वहुत पैघ उत्कृष्टशतवासहस्र पाश अछि ताहि पाश सँ आइ सूर्य्य ओ बिष्णु तथा विश्वेदेव ओ बायु बारहो आदित्य ई सव एहि आहुति सँ सन्तुष्ट भय हमर रक्षा करथु तें हेतु ई आहुति बरुण कें ओ सूर्य्य; कें बिष्णु बिश्वेदेव बायु तथा बारहो आदित्य कें प्राप्तहोउन्ह । (२) हे बरुण ! अपनेक जे उत्तम मध्यम ओ अधम स्थान में पाश अछि ताहि सँ हमरा छोड़ाउ जाहि सँ अनपराधी हम अपनेक पूजा करबा में दीन नहि होइ से करू तें हेतु ई घृत अपने कें अग्नि में दैत छी ॥ ई सब सकल प्रायश्चित्त होम भेल (३) तखन हवनक शेष तथा अन्वारम्भ कें छाड़ि ॥ (४) सत्य संयुक्त सत्यस्थान निवासो अग्नि रुप जे गन्धर्व तनिक मुदनामक धान्यादि ब्रोहि औषधी सब अप्सरा थिकथिन्ह तें हेतु हुनका सबहिं कें ई आहुति दैत छिथैन्हि सबहिं गोटें ज्ञान वलक रक्षा करथु ई आहुति मुद नामक धान्यादि ब्रोहि औषधी अप्सरा कें प्राप्त होउन्ह ।

(१) ओम् येते शत्तम्बरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशाविततामहान्तस्तेभिर्नोअद्यसवितोत बिष्णुर्बिश्वेमुञ्चन्तुमरुतः स्वर्क्काः स्वाहा । इदम्बरुणाय सवित्रे विष्णवेविश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यः (२) ओम् उदुत्तमम्वरुणपाशमस्मद् वाधमं बिमध्यमऽं श्रथाय अथावय मादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा । इदम्बरुणाय ॥ एताः सर्वप्रायश्चित्त संज्ञकाः (३) ततो हुतशेषमन्वारम्भ-श्वविना ॥ ओम् ऋताषाड़ृतधामाग्निर्गन्धर्वस्सन इदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदमृतासाहे ऋतधाम्ने अग्नये गन्धर्वाय (४) ओम् ऋताषाड़ृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदोनामताभ्यः स्वाहा । इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्योमुद्भ्यः (५) ओम् सऽंहितोविश्वसामा सूर्य्योगन्धर्वस्सन इदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं सऽंहिताय विश्वसाम्ने सूर्य्याय गन्धर्वाय ॥ (६) ओम् सऽं हितो विश्वसामा सूर्य्योगन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवोनाम ताभ्यः स्वाहा । इदम्मरीचिभ्यो ऽप्सरोभ्य आयुभ्यः ॥

(५) दिन राति केर विधान कैनिहारसकल वेद मयसूर्य्य रूपगन्धर्व हुनका ई आहुति दैत छिथैन्हि ताहि आहुति कें प्राप्त कय हमर ज्ञान वलक रक्षा करथु तें हेतु ई आहुति दिन राति केर बिधान कैनिहार सकल साम वेद मय सूर्य्य रूप गन्धर्व कें प्राप्त होउन्ह । (६) दिन राति केर विधान कैनिहार सकल सामवेद मय जे सूर्य्य रूप गन्धर्व तनिक आयुव नामक किरण सव अप्सरा थकथिन्ह ताहि सवहिं कें ई आहुति दैत छिथैन्हि सवहिं गोटें हमर ज्ञान वलक रक्षा करथु तें ई आहुति आयुव नामक किरण अप्सरा कें प्राप्त होउन्ह ।

(१) सुषुम्ण नामक सूर्य्यक तेज चन्द्रमा रूप गन्धर्ब हुनका ई आहुति दैत छिएन्हि ताहि आहुतिकें प्राप्त कय हमर ज्ञान बलक रक्षा करथु तें हेतु ई आहुति सुषुम्ण नामक सूर्य्य तेज मय चन्द्ररूप गन्धर्व कें प्राप्त होउन्ह (२) सुषुम्ण नामक तथा सूर्य्यक तेज जेचन्द्रमा रूप गन्धर्व तनिक भेकुरि नामक नक्षत्र सब अप्सरा थिकथिन्ह ताहि सबहिं कें ई आहुति दैत छिऐन्हि ओसबहि हमर ज्ञान बलक रक्षा करथु तें ई आहुति भेकुरि नामक नक्षत्र अप्सरा कें प्राप्त होउन्ह (२) संसार में सब ठाम रहनिहार गमनशील जे वायुरूप गन्धर्ब तनिका ई आहुति दैत छिऐन्हि ओ एहि आहुतिकें प्राप्त कय हमर ज्ञान बलक रक्षा करथु तें ई आहुति सर्व व्यापी गमनशील बायुरूपगन्धर्व कें प्राप्त होउन्ह।

(१) ओम् सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्सन इदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं सुषुम्णाय सूर्य्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय (२) ओम् सुषुम्णःसूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्यनक्षत्रा एयप्सरसो भेकुरयोनामताभ्यः स्वाहा। इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यः (३) ओम् इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्सन इदम्ब्रह्म क्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा बाट्। इदमिषिराय विश्वव्यचसे वातायगन्धर्वाय (४) ओम् इषिरो विश्वव्यचावातो गन्धर्वस्तस्यापो अप्सरसः ऊर्जोनाम ताभ्यः स्वाहा। इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्भ्यः (५) ओम् भुज्युः सुपर्णोयज्ञो गन्धर्वस्सन इदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा बाट्। इदम्भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय (६) ओम भुज्युःसुपर्णो यज्ञोगन्धर्वस्तस्य दक्षिणाअप्सरसस्तावानामताभ्यः स्वाहा। इदन्दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्य स्तावाभ्यः

(४) संसार मेंसर्व व्यापी गमनशील जे बायुरूप गन्धर्व हुनक ऊर्ज नामक जल अप्सरा थिकथिन्ह ताहि सबहिं कें ई आहुति दैत छिऐन्हि ओ हमर ज्ञान बलक रक्षा करथु तें ई आहुति ऊर्ज नामक जलरूप अप्सराके प्राप्त होउन्ह (५) सबप्राणोक पालन कैनिहार तथा सुन्दर चलनिहार जे यज्ञरूप गन्धर्व तनिका ई आहुति दैत छिऐन्हि ओ एहि आहुति कें प्राप्त कय हमर ज्ञान बलक रक्षा करथु तें ई आहुति सबप्राणीक पालन कैनिहार सुन्दर चलनि हार यज्ञ रूप गन्धर्व कें प्राप्त होउन्ह (३) सबप्राणोक पालन कैनिहार ओ सुन्दर चलनिहार जे यज्ञरूप गन्धर्वहुनक स्तावा नामक दछिणा अप्सरा थिकथिन्ह ताहि सबंहि कैं ई आहुति दैत छिऐन्हि ओ हमर ज्ञान बलक रक्षा करथु तें ई आहुति स्तावा नामक दक्षिणा अप्सरा कें प्राप्ति होउन्ह।

(१)लोक सबहिंक स्वामी-संसार निर्म्माण कैनिहार जे मन रूप गन्धर्व तनिका ई आहुति हम दैत छिऐन्हि ! ओ एहि आहुति कें प्राप्त कय हमर ज्ञान बलक रक्षा करथु तें ई आहुति लोक सबहिंक स्वामी संसार केर निर्म्माण कैनिहार मन रूप गन्धर्व कें प्राप्त होउम्ह। (२) लोक सबहिंक स्वामी संसार निर्म्माण कैनिहार मन रूप जे गन्धर्व तनिक एष्टि नामक ऋक्साम अप्सरा थिकथि-ह तनिका सबहिं कें ई आहुति दैत छिऐन्हि ओ सबहिं हमर ज्ञान बलक रक्षा करथु तें ई आहुति एष्टि नामक ऋक् साम अप्सरा कें प्राप्त होउ-ह। ई राष्ट्रभृत् (देश पालन कैनिहार) नामक होम भेल।

(१) ओम् प्रजापतिर्बिश्वकर्म्मा मनोगन्धर्वस्तस्य इदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदम्प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय (२) ओम् प्रजापतिर्विश्वकर्म्मामनो गन्धर्वस्तस्यऋकसामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं ऋकसामेभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यः ॥ इति राष्ट्रभृत् (३) ओम् चित्तञ्च स्वाहा। इदञ्चित्ताय ॥ (४) ओम् चित्तिश्चस्वाहा इदञ्चित्यै (५) ओम् आकूतञ्चस्वाहा। इदमाकूताय (६) ओम् आकूतिश्च स्वाहा। इदमाकूत्यै (७)ओम् विज्ञातञ्च स्वाहा। इदम्विज्ञाताय [८] ओम् विज्ञातिश्च स्वाहा। इदम्विज्ञात्यै [९] ओम् मनश्च स्वाहा। इदम्मनसे[१०] ओम् शक्करीश्च स्वाहा इदं शक्करीभ्यः (११) ओम् दर्शश्च स्वाहा। इदन्दर्शाय (१२) ओम् पौर्णमासञ्च स्वाहा।इदम्पौर्णमासाय

(३) प्रजापति हमरा ज्ञान देथि तें हेतु ई घृत हम प्रजापति कें दैत छिऐन्हि (४) प्रजापति हमरा धर्म में सम्मुख राखथि (५) शिल्पादि ज्ञान हमरा देथि तें ई घृत प्रजापति कें दैत छिऐन्हि (६) विशेष ज्ञान देथि तें हेतु ई घृत प्रजा पति के० (७) विश्व बुद्धि देथि तें हेतु ई घृत० (८) प्रजापति शुद्ध मन देथि तें हेतु ई घृत० (९) प्रजापति शक्करी देथि तें हेतु इ घृत० (१०) प्रजापति हमरा चन्द्रमा सूर्य्यक सय्योग जकाँ लोकमें योग करावथु तें हेतु ई घृत० (११) प्रजापति हमरा पूर्णिमाक चन्द्रमाँ जकाँ पुष्ट राखथि तें हेतु ई घृत प्रजापति कें दैत छिऐन्हि।

(१) प्रजापति हमरा सामवेद देथि तें हेतु ई घृत हम प्रजापति० (३) शत्रुक सेना में विजय केनहार प्रजापति बृषनामक इन्द्र कें विजय देलथिन्ह यनिका सब प्रजा प्रणाम केलकैन्हि तें हेतु सबमें श्रेष्ठ ओ यज्ञ भोक्ता भेलाह हुनका हम जयलाम करबाक हेतु ई घृत दैत छिऐन्हि। ई घृत इन्द्रकेंजय देनिहारप्रजापतिकें दैतछिऐन्ह॥ई जया होम भेल॥ (४) जे अग्नि सब प्राणी केर पालन केनहार थिकथि से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि बल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में सब ठाम पालन करथु तें हेतु ई घृत भूत सबहिंक स्वामी जे अग्नि हुनका दैत छिऐन्हि॥ (४) श्रेष्ठलोकनिक पालन केनहार जे इन्द्र से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि बल मे एहिआशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु

(१) ओम् बृहच्च स्वाहा। इदम्बृहते (२) ओम् रथन्तरञ्चस्वाहा।इदं रथन्तराय (३) ओम् प्रजापतिर्ज्जयानिन्द्राय बृष्णे प्राय-च्छदुग्रः पृतना जयेषु। तस्मै विशः समनमन्त सर्वास्स उग्रस्स इहव्यो बभूव स्वाहा इदम्प्रजापतये जयानिन्द्राय॥ इति जयाहोमः॥ (४) ओम् अग्निर्भूतानामधिपतिः समाबन्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन कर्म्मण्य-स्यान्देवहूत्याऽं स्वाहा। इदमग्नये भूतानामधिपतये (५) ओम् इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिस्समाबत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा-शिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याऽं स्वाहा। इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये (६) ओम् यमः पृथिव्याअधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरो धायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याऽं स्वाहा। इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये॥ (७) अत्रप्रणीतोदकस्पर्शः (८) ओम् वायुरन्तरिक्ष स्याधिपतिः समावत्व स्मिन् ब्रह्मण्य स्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पु-

श्रेष्ठ लोकनिक पालन केनहार इन्द्रकें ई घृत देत छिऐन्हि (६) पृथ्वी केर पालन केनहार जेयम से हमर एहि ब्रह्मतेज में बल में आशीर्वाद में एहि स्त्री में विवाहरूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु पृथ्वीक पालन केनहार यम कें ई घृत दैत छिऐन्हि (७) एहि ठाम प्रणीतापात्रक जल स्पर्श करथि (८) आकाश केर अधिपति जे वायु से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि बल मे एहि आशीर्वाद मे

प्रणीतोदक स्पर्श इति॥ रौद्र पैत्रासुरान्मन्त्रांस्तथा चैवाभिचारिकन्। व्याहृत्यालभ्य चात्मान मपः स्पृष्ट्वान्यदाचरेत्॥ रुद्र पितृ असुर तथा अभिचारिक मन्त्र सबके पढ़ि हृदय छूबि कें तखन जल स्पर्श कय आन क्रिया आरम्भ करी॥

एहि स्त्री में एहि बिबाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु आकाशक अधिपति जेबायु हुनका ई घृत दै त छिऐन्हि (१) स्वर्ग क अधिपति जे सूर्य्य से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि वल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्रीमें एहि विबाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु स्वर्ग क अधिपति जे सूर्य्य हुनका ई घृत दै त छिऐन्हि (२) नक्षत्र सबहिंक स्वामी जे चन्द्रमा से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि वल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि देवताक आह्वान मे पालन करथु तैं हेतु ई घृत नक्षत्रक स्वामी चन्द्रमा कें दै त छिऐन्हि (३) देवता सवहिंक स्वामी जे बृहस्पति से

रोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याँ स्वाहा इदम्वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये (१) ओम् सूर्य्योदिवोऽधिपतिस्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याँ स्वाहा इदं सूर्य्याय दिवोऽधिपतये (२)ओम् चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिस्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याँ स्वाहा इदञ्चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये (३) ओम् बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिस्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याँ स्वाहा इदम्बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये (४) ओम् मित्रः सत्यानामधिपतिस्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याँ स्वाहा इदम्मित्राय सत्यानामधिपतये (५) ओम् बरुणोऽपामधिपतिस्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्

हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि बल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विबाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु ईघृत देवता सवहिंक स्वामी जे बृहस्पति हुनका हम दै त छिऐन्हि (४) अबिनाशी सत्य केर अधिपति जे सूर्य्य से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि बलमें एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विबाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु सत्य केर अधिपति जे सूर्य्य हुनका ई घृत दै त छिऐन्हि (५) जलक स्वामी जे बरुण से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि

(१) वलमें एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु जलक स्वामी जे वरुण हुनका हम ईघृत दैत छिऐन्हि (२) नदी सवहिंक स्वामी जे समुद्र से हमर एहिब्रह्मतेज में एहिवल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु नदी सवहिंक स्वामी जे समुद्र हुनका ई घृत दैत छिऐन्हि (३) ऐश्वर्य्यक स्वामी जे अन्न से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि वल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु

(१) क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याᳬ स्वाहा - इदम्वरुणायापामधिपतये । (२) ओम् समुद्रः स्त्रोत्यानामधिपतिस्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याᳬ स्वाहा। इदं समुद्राय स्त्रोत्यानामधिपतये (३) ओम् अन्नᳬ साम्राज्यानामधिपति स्समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याᳬ स्वाहा । इदमन्नाय सम्राज्यानामधिपतये (४) ओम् सोम औषधीनामधिपतिस्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायाम स्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याᳬ स्वाहा। इदं सोमायौषधीनामधिपतये ॥ (५) ओम् सविताप्रसवानामधिपतिस्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याᳬ स्वाहा । इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये ॥

तें हेतु ऐश्वर्य्यक स्वामी जे अन्न हुनका ई घृत दैत छिऐन्हि (४) औषधी सवहिंक स्वामी जे चन्द्रमा से हमर एहिं ब्रह्मतेज में एहि वल मेंएहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु-तें हेतु ऐश्वर्य्यक स्वामी जे अन्न हुनका हम ई घृत दैत छिऐन्हि (५) जीव सवहिंक स्वामी जे सूर्य्य से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि वल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु जीव सवहिंक स्वामी जे सूर्य्य हुनका हम ई घृत दैत छिऐन्हि ।

(१) पशु सवहिक स्वामी जे रूद्र से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु पशु सवहिंक स्वामी रुद्र कें ई घृत दैत छिऐन्हि (एहिठाम प्रणीतापात्रक जल स्पर्श करथि) (२) रूपक स्वामी जे त्वष्टा से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि वल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथुतें हेतु ई घृत रूपक स्वामी जे त्वष्टा हुनका हम दैत छिऐन्हि (३) पर्वत सर्वहिक स्वामी जे विष्णु से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि बल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप

(१) ओम् रूद्रःपशूनामधिपतिस्समावत्वस्मिंन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधाया मस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देव हूत्याँ स्वाहा इदं रूद्राय पशूनामधिपतये [अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः] (२) ओम् त्वष्टारूपाणामधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याँ स्वाहा इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये (३) ओम् विष्णुः पर्वतानामधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देव हूत्याँ स्वाहा इदम्विष्णवे पर्वतानामधिपतये (४) ओम् मरुतोगणानामधिपतयस्तेमावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देवहूत्याँ स्वाहा इदमरुद्भ्योगणानामधिपतिभ्यः ।

कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु ई घृत पर्वत सवहिक स्वामी जे विष्णु हुनका दैत छिऐन्हि (४) समुद्रक स्वामी जे वायु से हमर एहि ब्रह्मतेज में एहि वल में एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु ई घृत समुद्रक स्वोमी वायु कें दैत छिऐन्हि ।

(१) हमर जे पिता पितामह प्रपितामह इत्यादि पितर छथि से सबहिं गोटें हमर एहि ब्रह्मतेज में एहिबलमें एहि आशीर्वाद में एहि स्त्री में एहि विवाह रूप कर्म्म में एहि देवताक आह्वान में पालन करथु तें हेतु ई घृत पिता पितामह प्रपितामह इत्यादि पितर कें दैत छिऐन्हि (२) एहिठाम प्रणीतापात्रक जल स्पर्श करथि। ई अभ्यातान नामक होम भेल) देवता सबहिं में श्रेष्ठ जे अग्नि से आवथु एहि स्त्रीक सन्तान के मरण वन्धन से छोड़ावथु जाहि सँ ई स्त्री पुत्रक दुःख सँ नहिं कानथि से ई विषय राजा बरुण जानथु ते हेतु ई घृत अग्नि कें दैत छिऐन्हि (४) गार्हपत्य नामक

(१) ओम् पितरः पितामहाः परेऽवरेततास्ततामहाइहमामवन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यान्देव-हूत्याᳬ स्वाहा इदम्पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यः (२) अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः। इत्यभ्यातान नामकम् (३) ओम् अग्निरैतुप्रथमोदेवतानाᳬ सोऽस्यै प्रजाम्मुञ्चतुमृत्युपाशात्। तदयᳬ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयᳬ स्त्री पौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा। इदमग्नये (४) ओम् इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यैनयतुदीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तुमाता पौत्रमानन्दमभिबुध्यतामियᳬ स्वाहा इदमग्नये गार्हपत्याय (५) ओम् स्वस्तिनोऽग्ने द्यावापृथिव्याविश्वानिधेह्ययथायजत्र। यदस्याम्महि दिविजातम्प्रशस्तन्तदस्मासुद्रविड़न्धेहिचित्रᳬ स्वाहा इदमग्नये।

अग्नि एहि स्त्रीक पालन करथु जाहि सँ ई स्त्री सन्तान लाभ करथि तथा चिरजीविनी होथि ओ सतत हमर सङ्ग रहथि चिरजीवी सन्तान होइन्ह पुत्र सँ सुख होइन्हि तैं हेतु ई घृत गार्हपत्य नामक अग्निकें दैत छिऐन्हि (५) हे सेवक कें पालन कैनिहार अग्नि! स्वर्ग में पृथिवी में सब ठाम हमर कल्याण करू एहि पृथिवी में तथा स्वर्ग में उत्पन्न भेल अनेक तरहक गाय सुवर्ण इत्यादि वस्तु से सब हमरा दिय तें हेतु ई घृत अग्नि कें दैत छिऐन्हि।

(१) हे तेजस्वी गण में प्रधान अग्नि हमरा उत्तम पथ देखवैत तथा चिरजोवी करैत अपनें आउ तथा (मोक्ष) सुख आवथु अपनेक आगमन सँ यमराज हमरा मरण सं निर्भय करथु तें हेतु ई घृत यमराज कें दैत छिऐन्हि (२) एहि ठाम प्रणीता पातक जल स्पर्श करथि (३) हे मृत्यु १ यकरामें हिंसा नहिं रहैक ताहि तरहक तथा देवताक पथ सं भिन्न उत्तम पथ सं अपनें हमरा विषें च लू सबलोक व्यवहार कें देखनिहार शुननिहार आंखि कान वाला अपनें कें हम प्रार्थना सं कहैत छी जे हमर सन्तान कें नहिं मारू तथा वीर पुरूष कें नहिं मारू तें हेतु ई घृत अग्नि में दैत छी

(१) ओम् सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्येह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतम् आगाद्वैवस्वतो नो अभयङ्कृणोतु स्वाहा। इदम्वैवस्वताय (२) अत्रप्रणीतोदकस्पर्शः (३) ओम् परम्मृत्यो अनुपरेहिपन्थां यस्ते अन्यइतरोदेवयानात् चक्षुष्मते शृणवते ते ब्रवीमि मानः प्रजाना७ँ रीरिषो मोतबीरान्स्वाहा इदं मृत्यवे (४) अत्रप्रणीतोदक स्पर्शः (५) ततो वधूमग्रतः कृत्वा वधूवरौ प्राङ्मुखावुत्थितौ भवतः (६) ततो वराञ्जलिपुटोपरि संलग्न वध्वञ्जलिस्थ घृताभिघारित वधूभ्रातृदत्त शमीपलाश मिश्रै र्लाजैर्वधूकर्तृक मन्त्रपाठपूर्वको होमः (७) ओम् अर्य्यमणन्देवङ्कन्या अग्निमयक्षत। सनो अर्य्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मापतेः स्वाहा। इदमर्य्यम्णे (८) ओम् इयन्नार्य्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयोमम स्वाहा इदमग्नये॥

(४) एहि ठाम प्रणीता पातक जल स्पर्श करथि (५) तखन स्त्री कें आगां कय पूव मुह दूनू स्त्री पुरुष ठाढ़ होथि (६) तखन वरक जोड़ल दूनू हाथ पर कन्या अपन दूनू हाथ राखथि ताहि पर घृत शैनि पलाश मिलावोललावा अपन भाइक हाथें लय मन्त्र पढ़ैत होम करथि (७) ई कन्या दीप्यमान सूर्य्य रूप अग्निक पूजा करैत छथि कारण जे सूर्य्य देवता हमरा एहि स्वामी सं विच्छेद नहिं करावथु तें हेतु ई आहुति हम अग्निरूपी सूर्य्य कें दैत छिऐन्हि (८) अग्नि में लावा दैत ई नारी प्रार्थना सं बजैत छथि जे हे अग्नि हमर स्वामी चिरजीवी होथु आवोर हमर वन्धु वर्ग कें वृद्धि होन्हि तें हेतु ई आहुति हम अग्नि में दैत छी —

वधूभ्रातृ इति वध्वाः सहोदर भ्रातु रभावे पितृव्य पुत्रा दयः तथा चाश्वलायनः भ्रातृ स्थानः पितृ व्यस्य मातुल स्यवय;सुतः। मातृ ष्वसुः सुतस्त द्वत् सुतस्त इतिपितृ ष्वसुरिति। एहिठाम तोनिबेरि अञ्जलि में लावा लय के होम करथि शूप में नहिं। आगां १४ पत्रमें एक बेरि सूपक कुष्ठ (जिह्वा) सं होम करथि से ताहोठाम उक्त अछि। यथा लाजाञ्जलिर्वध्वाहूयतेऽङ्गुलि पर्वभिः। एवंलाजाहविः शेषं हुवते शूर्प जिह्वया। लाजा होमश्चायं कनिष्ठा मूलात्मक सोमतीर्थेन कार्य्य इति गोभिलः

(१) हे स्वामिन् ? अपनेक कल्याणक हेतु ई लावा हम अग्नि में दैत छी अपन क ओ हमर एक ठाम वास हो से अग्नि बूझथु तें हेतु ई आहुति हम अग्नि के दैत छिएन्हि (२) तखन वर आंगुठ सहित दहिन हाथ वधूक पकड़थि (३) हे सुन्दरि ? सौभाग्य लाभ करवाक हेतु हम अहाँक हाथ पकड़ैत छी हमरा सङ्ग अहाँ अधिक दिन जीवू। गृहस्थक धर्म्म पालन करवाक हेतु सूर्य्य आदि देवता सब अहाँके हमरा देलन्हि। हम अहाँ विना लक्ष्मी सँ शून्य छी अहाँ हमर लक्ष्मी थिकहुँ। हम सामवेद थिकहुँ अहाँ ऋग्वेद थिकहुँ हम आकाश थिकहुँ अहाँ पृथिवी थिकहुँ।

(१ ओम् इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धि करणन्तव। ममतुभ्यचसम्बदनन्तदग्निरनुमन्यतामियँ स्वाहा इदमग्नये (२) ततो बरो बधू दक्षिण हस्तं सङ्गुष्ठं गृह्णाति (३) ओम् गृभ्णामिते सौभगत्वाय मया पत्या जरदष्टिर्य्यथासः। भगो अर्य्यमा सबिता पुरन्धिर्म्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः। अमोऽ हमस्मिसात्वँ सात्वमस्यमोऽहम्। सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्योरहम्पृथिवीत्वम्। ताबेहि विवाहावहै सहरेतो दधावहै प्रजाम्प्रजनयाबहै पुत्रान् विन्दावहै बहून्। तेसन्तु जरदष्टयः सम्प्रियौरोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ इतिमन्त्रेण (४) अथ बधूमग्नेरुत्तरतः प्राङ्मुखीम्पूर्वोपकल्पित दृषदुपलं दक्षिणपादेनारोहयतिबरः (५) ओम् आरोहेममश्मान मश्मेवत्वं स्थिराभव। अभितिष्ठपृतन्यतोऽववाधस्व पृतनायतः इतिमन्त्रेण [६] आरूढायामेवतस्याम्वरोगाथाङ्गायति।

तें हेतु आउ हम दूनू गोटें विवाह करू से भेला सं अहां में हमवीर्य्य देव ताहि सँ सन्तान उत्पन्न करव वहुत पुत्र लाभ करव ओ पुत्र सव चिरजीवी होथि हम दूनू गोटें अपना में खूब स्नेहराखव तथा तेजस्वी होएव सुख सं शय वर्ष सव देखव शय वर्ष जीव। एहि मन्त्र सं (४) तखन अग्नि सं उत्तर दिशि पहिनहिं सँ राखल पाथर पर पूव मुहें वधूक दहिन पैर वर दिआवथि (५) हे सुन्दरि ? एहि पाथर पर अहाँ चढ़ू पाथर जकां स्थिर होउ अहां सं विरुद्ध जे व्यक्ति (अहांक आक्रमण करवाक हेतु) सैन्यक अभिलाषा करथि हुनका पैर सं दावू शत्रु कें पराजय करू॥ एहि मन्त्र सं (६) वधू पाथर पर ठाढ़िए रहथि ताहि काल वर गाथागान (एहि विवाह कर्म्म में प्रमाद कृतदोष निवारणार्थ सरस्वतीक स्तुति) करथि॥

(१) हे सरस्वति ? हे सुन्दरि ? हे कीर्त्तिरुपाभय ग्रोड़ी जकाँ एहि संसार में सब प्राणीक आगाँ शीघ्र चलनिहारि ? एहि विवाह कर्म्म में प्रमाद सँ जे त्रुटि भेल हो तकर पालन करु जाहि अपने में पृथ्वी जल तेज वायु आकाश सब भेल अछि ओ चराचर सब ई संसार भेल अछि जे अपनेक गान स्त्रीगण कें उत्तम यश थिकैन्ह ताहि अपनेक गान कें आइ हम गाबैत छी (२) तखन आगाँ वधू पश्चात् वर प्रणीता पात्र ब्रह्मा सहित अग्नि प्रदक्षिण करथि। ताहि ठाम वर मन्त्र पढ़थि (३) हे अग्नि सूर्य्यक समान तेजवाली ई कन्या सँ पहिने अहाँक हेतु चन्द्रमा गन्धर्व विवाह कैलैन्हि फेरु अहाँक सङ्ग सँ हिनका मनुष्य विवाह करथु तेँ सन्तान उत्पन्न करवाक हेतु ई स्त्री हमरा दिय (४) तखन अग्नि सँ पाछाँ पहिनहि जकाँ ठाढ़ भय लावा सँ होम आंगुर सहित हाथ

(१) ओम् सरस्वति प्रेदमवसुभगे वाजिनीवति। यान्त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः। यस्याम्भूतं समभवद्यस्याम्भूतमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः (२) ततोऽग्रे वधूः पश्चाद्वरः प्रणीताब्रह्मसहितमग्निम्प्रदक्षिणी कुरुतः। तत्र मन्त्रं वरः पठति (३) ओम् तुभ्यमग्रे पर्य्यवहन्त्सूर्य्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायान्दा अग्ने प्रजया सह (४) ततः पश्चादग्नेः पूर्ववत्स्थित्वा लाजा होमं साङ्गुष्ठ हस्त धारणाश्मारोहण गाथागानाग्नि प्रदक्षिणानि पूर्ववत्पुनरपि तथैव (५) एतेन नवलाजाहुतयः साङ्गुष्ठहस्तग्रहणात्र्यमश्मारोहणात्रयं गाथागानत्रयमग्निप्रदक्षिणा त्रयं चसम्पद्यन्ते [६] ततोऽवशिष्टं लाजैः कन्याभ्रातृदत्तैरञ्जलिस्थैः [७] शूर्पकोणेन वधूर्जुहोति [७] ओम् भगाय स्वाहा। इदम्भगाय (८) ततस्तूष्णीञ्चतुर्थं परिक्रमणम् (९ ततो वर उपविश्य ब्राह्मणान्वा रब्ध (आज्येन प्राजापत्यं जुहोति।

धरव पाथरपर पैर राखव गाथागान अग्नि प्रदक्षिण पहिनहिँ जकाँ फेरु ताही तरहँ करथि (५) एहि सँ नवो बेरि लावा सँ होम आंगुर सहित हाथ पकड़व तोनि बेरि पाथर पर पैर देव तीनि बेरि अग्नि प्रदक्षिण तीनि बेरि सम्पन्न भेल (६) तखन भाइ सँ देल शेष लावा लय हाथ में राखल शूपक कोन (कुण्ठाकार जिह्वा) द्वारा आगिमेँ खसबैत वधू होम करथि (७) ई लावा कामदेव कें प्राप्त होउन्ह तें हेतु ई लावा कामदेवकें देत छिऐन्हि (८) तखन बिना मन्त्रहि चारिम बेरि प्रदक्षिण करथि (८) तखन वर बैसिक अपना सँ ब्रह्मा पर्य्यन्त एक कुश राखथि घृत सँ प्राजापतिक होम करथि।

(९) शूर्पकोणेनेति। अग्ने वविध्रवानारो कोणे चैव मृतप्रजाः। जुहुयाच्छूर्प कुण्ठेन तचाग्रेणन कोणयोः। गृह्यासंग्रहे यथा लाजाञ्जलिं वत्वा हसतेऽङ्गुलिपर्वभिः। एवं लाजाहविः शेषं हूयतें शूर्प जिह्वया शूप जिह्वया शूर्पं जिह्वाग्रेण कुण्ठाकारेण होमं कुर्य्यात।

१३

(१) एहि आहुति सँ प्रजापति सन्तुष्ट होथि तें हेतु ई आहुति प्रजापति कें दैत छिएन्हि। ई मनसा नामक होम भेल (२) एहि ठाम आहुतिक शेष प्रोक्षणी पात्र में राखथि (३) तखन एँपन सँ उत्तर उत्तर क्रमें बनाओल सातटा मण्डल (सप्तपदी) पर सात बेरि वधू सँ पैर अगिला मन्त्र सँ वर दिआवथि (४) पहिल पर हे सखि ? मनोरथ पूर्ण करवाक हेतु एक डेग विष्णु अहाँ के लय जाथु (५) दोसर पर हे सखि ? वल लाभ करवाक हेतु दूइ डेग विष्णु अहाँ कें लय जाथु (६) तेसर पर हे सखि ? धन वढ़ैवाक हेतु तीनि डेग विष्णु अहाँ कें लय जाथु

(१) ओम् प्रजापतये स्वाहा इदम्प्रजापतये। इति मनसा (२) अत्रप्रोक्षणीपात्रे हुतशेषस्य प्रक्षेपः (३) तत आलेपनेनोत्तरोत्तर क्रमेण कृत सप्तमण्डलेषु सप्तपदाक्रमणम्बधूम्बरोवक्ष्यमाणमन्त्रैः कारयति (४) तत्र प्रथमे ओम् एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु (५) द्वितीये ओम् द्वे ऊर्जे विष्णु स्त्वानयतु (६) तृतीये ओम् त्रीणिरायस्पोषाय विष्णु स्त्वानयतु (७) ओम् चत्वारिमायो भवाय विष्णुस्त्वानयतु (८) पञ्चमे ओम् पञ्चपशुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु (९) षष्ठे ओम् षड्तुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु (१०) सप्तमे ओम् सखे सप्तपदा भव सामामनुव्रताभव विष्णुस्त्वानयतु (११) ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य पुरुषस्कन्धावस्थित कुम्भादाम्र-पल्लवेनजलमानीयबरो बधू मभिषिञ्चति (१२) ओम् आपः शिवाःशिवतमाः शान्ताःशान्ततमाः। तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्। इत्यनेन।

(७) चारिमपर हे सखि ! सौख्यउत्पन्नकरवाक हेतु चारिम डेग विष्णु अहाँ कें लय जाथु (८) पाचमपर हे सखि ! पशुसवहिंक कल्याण करवाक हेतु पाचम डेग विष्णु अहाँ के लयजाथु (९) छठमपर हे सखि ! ऋतुसमय प्राप्ति करवाक हेतु छठम डेग विष्णु अहाँ कें लयजाथु (१०) सातमपर हे सखि ! हमर व्रतपालन कैनिहारि होउ पातिव्रत ओ भूरादि सातोलोक प्राप्तिकरवाक हेतु सातम डेग विष्णु अहाँ कें लय जाथु (११) तखन अग्नि सँ पाछाँ वैसि पुरुषक कान्ह पर राखल कलशक जल आमक पल्लव सँ लय कन्या कें वर सेचन करथि (१२) अतिसँ कल्याण कैनिहार तथा अत्यन्त (शान्त) अनुपद्रव कैनिहार जल अहाँ के रोग नाँशक औषध होथि एहि मन्त्र सँ।

(१) फेर ताही कऽशक ताही तरहें लेल जल सं सेचन करथि (२) हे जल ! अहाँ सुखक स्थान थिकहु हमरा वल हो तें हेतु धारण करैत छी हमरा परमात्मा सं सयोग कराउ। इच्छा-वाली माय दूध रूप रसक भागी जाहो तरहें पुत्र कें बनावैत छथि ताही तरहें (३) अहाँक जे कल्याण स्वरूप रस अछि तकर भागी हमरा बनाउ। (४) जे अपनेक रस सातो लोक में तृप्ति करावैत अछि ताहि रस सं हम तृप्ति होएब ताहि रसक भोक्ता हमरा बनाउ एहि तीनो मन्त्र सं (५) तखन (दिनकें विवाह भेने) सूर्य्य कें देखू ई वधूकें वर कहथिन्ह तखन वर मन्त्र पढ़थि (६) पूव दिशा में उगल पापहीन देवता सबहिंक हित तीनो लोक कें देखनहार ब्रह्मक आँखि रूप सूर्य्यक विम्ब थिकन्हि। हमरा लोकनि शय वर्ष देखब शय वर्ष जोब शय वर्ष सब शूनब शय वर्ष बाजव

(१) पुनस्तत एव कुम्भात्तथैवानीत जलेनाभिषिञ्चति (२) ओम् आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणायचक्षसे (३) ओम् योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः। उशतीरिवमातरः (४) ओम् तस्माअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ। आपा जनयथाचनः इति तिसृभिः (५) ततः सूर्य्यमुदीक्षस्व इति वधूंसम्बोध्य वर आह (६) ओम् तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात् इति पठित्वा वधूः सूर्य्यम्पश्यति (७) अस्तमितेसूर्य्ये। ध्रुवमुदीक्षस्व। इति पतिप्रैषानन्तरम्वधूः ध्रुवम्पश्यति। तत्र वरपठनीयो मन्त्रः (८) ओम् ध्रुवमसिध्रुवन्त्वापश्यामि ध्रुवैधिपोष्यामयिमह्यन्त्वादाद्बृहस्पतिः मयापत्याप्रजावती सञ्जीव शरदःशतम्।

शयवर्ष दीन नहि होएब ई मन्त्र वर पढ़थि तखन वधू सूर्य्य कें देखथि (७) राति के विवाह भेनें। ध्रुव कें देखू! ई कथा जखन स्वामी कहथिन्ह तखन वधू ध्रुव कें देखथि। ताहि ठाम वर मन्त्र पढ़थि (८) हे सुन्दरि! अहाँ ध्रुवजकाँ स्थिर होउ ध्रुव जकाँ स्थिर अहाँ कें हमदेखैत छी ध्रुव जकाँ स्थिर पोषण कैनि हारि होउ। अहाँ कें बृहस्पति हमरा देलन्हि पुत्र सहित अहाँ हमरा सङ्ग शय वर्ष जीवू॥

(१) एहि प्रकारें कहने तखन यदि वधू ध्रुव कें नहि देखथि तथापि हम देखैत छी ई वाजथि (२) एकर बाद वर वधूक दहिन कान्ह पर देने हाथलय जाय हुनक हृदय छूबथि (३) हे सुन्दरि ? अहांक हृदय हमर निश्चय में स्थिर होथि तें हेतु हमर चित्त अहांक चित्तक अनुकूल हो हमर वचन एकाग्र चित्त सँ पालन करू प्रजापति अहांकें हमरा में स्थिर करथु -- एहि मन्त्र सँ (४) एकर बाद वर वधू कें अभिमन्त्रित करथि (वधूक सौभाग्य प्रार्थना लोक सँ करथि) हे लोक सब ! ई वधू सुन्दर मङ्गल वाली छथि से अपनें लोकनि आउ देखिऔन्हि हिनका सौभाग्य दय कें अपनें लोकनि अपन स्थान जाउ।

(१) इति पृष्टा सा यद्यपि न पश्येत्तथापि पश्यामीत्येवम्ब्रूयात् (२) अथ वरो वधू दक्षिणांसस्योपरिहस्तन्नीत्वा तस्या हृदयमालभेत (३) ओम् मम व्रते ते हृदयन्दधामि मम चित्तमनुचित्तन्तेऽस्तु। मम वाचमेकमनाजुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् इति मन्त्रेण (४) अथ वधूमभिमन्त्रयतिवरः (५) ओम् सुमङ्गलीरियम्वधूरिमाᳬ समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यैदत्वायाथास्तम्विपरेतन। इति मन्त्रेण [६] अथ वधूम्बलवान्कश्चिद्ब्राह्मणः उत्थाप्य प्रागुदग्वा गुप्तागारे लोहितानडुहचर्म्मणिलोमास्तीर्णे बरोवा उपवेशयेत् [७] ओम् इहगावो निषीदन्तु इहाश्वा इहपुरुषाः। इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु। इति मन्त्रेण [८] अथ स्विष्टकृद्धोमः [९] ओम् अग्नये स्विष्टकृतेस्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते।

एहि मन्त्र सँ (६) एकर बाद किओ बलवान ब्राह्मण वा वर वधू कें उठाय पूव वा उत्तर दिशि शून्य घर में लाल लोम वाला अड़िआ बड़दक चाम पर वैसावथि (७) हे सुन्दरि ? एहि चाम पर अहाँक सङ्ग गाय वैसथु एहि चाम पर अहाँक सङ्ग घोड़ा वैसथु अहि चाम पर अहाँक सङ्ग पुरुष वैसथु एहि चाम पर अहाँक सङ्ग हजार दक्षिणा वाला यज्ञ वैसथु तथा सूर्य्य वैसथु एहि सबहिंक सङ्ग अहाँ वैसू। एहि मन्त्र सँ (ई व्यवहार नहिं अछि एकर स्थान में आमक पात कन्याक पैर तर वर देहिन्ह) (८) एकर बाद स्विष्ट कृत नामक होम करथि (९) हमर कल्याण कैनिहार जे अग्नि छथि हुनका ई घृत दैत छिऐन्हि।

(१) स्रु्व में हवनकशेष जे घृत से प्रोक्षणीपात्र में राखथि (२) ई होम अपना सँ ब्रह्मा पर्य्यन्त कुश द्वारा स्पर्शं राखि तखन करथि (३) तखन आचमन कय प्रोक्षणी पात्र में राखल हुतशेष प्राशन कय आचमन कय ब्रह्माक दक्षिणा करथि (४) आइ कैल जे अछि ई विवाह कर्म्मक अङ्गभूत होम कर्म्म ताहि में कैल बिनु कैल देयावरूप ब्रह्म कर्म्मक प्रतिष्ठाक हेतु प्रजापति देवताक ई पूर्णपात्र अमुक गोत्र अमुक शर्म्मा ब्राह्मण ब्रह्मा अपनें कें हम दक्षिणा दैतछी (५) ब्राह्मण जँ नहिं रहथि तँ उक्त प्रकारें ब्रह्म दक्षिणा करथि (६) ब्रह्मगेंठ खोलि देथि (७) ब्रह्मा जँ ब्राह्मण रहथि

(१) स्रुवावस्थितहुत शेषस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः (२) अयञ्च होमो ब्राह्मणान्वारब्धकर्त्तृकः (३) तत आचम्य संस्रवप्राशनं कृत्वाचम्य (४) ओम् अद्य कृतैतद्विवाहाङ्गभूत हाम कर्म्मणि कृता कृता वेक्षणरूप ब्रह्म कर्म्म प्रतिष्ठार्थमिदम्पूर्णपात्रम्प्रजापति दैवतममुक गोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणान्तुभ्य महं सम्प्रददे (५) अब्राह्मणपक्षे ओम् अद्य कृतैतद्विवाहाङ्गभूत होम कर्म्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्म कर्म्मप्रतिष्ठार्थमिदम्पूर्णपात्रम्प्रजापति दैवतम्ब्रह्मणे दक्षिणान्नमः इति दक्षिणान्दद्यात् (६) ब्रह्मग्रन्थि विमोकश्च कर्त्तव्यः [७] ब्राह्मण पक्षे ओम् स्वस्तीति प्रतिवचनम् [८] ततोऽग्नि प्रदक्षिणक्रमेण हस्तन्नीत्वा ब्रह्मोत्थापनम् [९] ततः ओम् सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु [१०] इति *पवित्रं गृहीत्वा प्रणीता जलेन शिरः सम्मृज्य ॥

तँ स्वस्ति ई कथा वाजथि (८) तखन अग्निक प्रदक्षिण क्रमसँ हाथ पकड़ि ब्रह्मा कें उठाय देथि (९) तखन जल हमरा सुन्दर मित्र जकाँ औषध होथि (१०) एहि मन्त्र सँ पैता लय प्रणीतापात्रक जल सँ माथ पर सिक्त करथि ॥

---

* अनन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशन्द्विदलमेवच । प्रादेशमात्रस्विज्ञेयम्पवित्रय्यत्र कुत्र चित् । एतदेवहि पिञ्जल्या लक्षणं समुदा हृतम् ॥ संस्रवति पात्रे पततीति संस्रवोहुतशेषस्तस्यप्राशनम् प्रोक्षणीपात्रस्थ हुत शेषस्य प्राशन मित्यर्थः । स्रुवलग्न घृत प्राशनममूलकमेव । प्रोक्षणी पात्र में राखल जे हवनक शेषघृत तकरे नाम संस्रव थिक तकरे प्राशन करथि — स्रुव संलग्न घृतक प्राशन में कोनो प्रमाण नहिं

(१) जे हमर द्वेष करैत छथि वा जनिक हम द्वेष करैत छिऐन्हि हुनका ई जल शत्रु होउन्ह (२) एहिमन्त्रें ईशान कोण में प्रणीतापात्र कें उनटाय देथि (३) तखन अछौला क क्रम सं कुश उठाय घृत लगाय कें बोड़ी बनाय अग्नि में देथि। तकर मन्त्र (४) हे यज्ञभुक्तहार देवता सब ? एहि विवाहरूप यज्ञ कें जानि आन यज्ञक हेतु जाउ। हे देव ? हे चन्द्रमा ? एहि यज्ञ कें वायु में राखू जें हेतु सब यज्ञ वायु में स्थिर रहैत छथि॥ इति (५) तखन ऊठि कें वधूक दहिन हाथ सं स्रुव पकड़ाय घृत फूल फल सं पूर्णाहुति अग्नि में देथि। तकर मन्त्र (६) स्वर्ग लोकक माँथ

v(१) ओम् दुर्म्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्मः (२) इत्यैशान्याम्प्रणीतान्युब्जीकरणम् [३] ततः स्तरण-क्रमेण *वर्हिरुत्थाप्य घृतेनाभिघार्य्यं हस्तेनैव जुहुयात्। तत्र मन्त्रः [४] ओम् देवागातुविदोगातुं वित्वागातुमितमनसस्पत इमन्देव यज्ञꣳ स्वाहा वातेऽधाः स्वाहा इति (५) तत उत्थाय बध्वा दक्षिणहस्तेन स्रुवेस्पृष्टे घृतपुःपफलैः पूर्णाहुतिन्दद्यात्*। तत्र मन्त्रः [६] ओमूर्द्धानन्दिवो अरतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृत आजातमग्निं। कविꣳ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः स्वाहा—इति [७] ततः उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकागृहीत भस्मना (८) ओम् त्र्यायुषञ्जमदग्नेः--इति ललाटे ६ ओम् कश्यपस्यत्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम् १० ओम् यद्देवेषुत्र्यायुषम् इति दक्षिण बाहुमूले।

ज़कां उच्चस्थान आकाश में सूर्य्यंकरूप सं दीप्यमान, दाहादि सं संसार भरि व्याप्त, सकल संसारक हित यज्ञ सब में हित, यज्ञ में उत्पन्न, अपन भक्त पर दयालु अत्यन्त तेजस्वी, यजमान सबहिंक अभ्यागत, देवता सबहिक मुख जे अग्नि हुनका देवता सब उत्पन्न कैलन्हि ताहि अग्नि कें यज्ञपूर्णक हेतु ई घृत दैत छिऐन्हि एहि मन्त्र सँ (७) तखन वैसिकें स्रुव सँ भस्म बाहार कय दहिन अनामिका सँ भस्म लय (८) जमदग्नि मुनिक वाल्य युवा वृद्ध तीनियों अवस्थाक आयु हमरा हो एहि मन्त्रें कपार में लगावथि (६) कश्यपमुनिक वाल्य युवा वृद्ध तीनियों अवश्थाक आयु हमरा हो—एहि मन्त्रें गर में लगावथि (१०) देवता सबहिक बाल्य युवा वृद्ध तीनियों अवस्थाक आयु हमरा हो एहि मन्त्रें दहिन बाहुंक मूल में लगावथि॥

*वर्हिरिति—कुशः प्रादेश मात्रस्तु दर्भश्तु द्विगुणः स्मृत। हस्त मात्रन्तु वर्हिः स्यात्तदूर्ध्वन्तृण मुच्यते॥ *अथ पूर्णाहुतिन्दद्यात्फल पुःपानुलेपनैः। साक्षतामूर्द्ध्वं कायस्वक्षमपाच्छक दिङ्मुखः॥

(१) ओ तोनियों अवस्थाक आयु हमरा हो पहि मन्त्रें हृदय में लगावथि २) पहि क्रम सँ बधूक कपार इत्यादि में आचारात् भस्म में सिन्दूर मिलाय लगाय देथिन्ह (३) बधूक बेरि (तन्नो) क स्थान में (तत्ते) एतबा विशेष कहथिन्ह (४) तखन आचार सँ शैन शण शङ्ख सुवर्ण दहिन हाथ मेँ लय बधूक माथ में बर सिन्दूर दान करथि (पहिठाम यद्यपि सिन्दूर दानक कोनो मन्त्र नहि अछि तथापि मङ्गलक हेतु (खर्व स्थूलतरम्) इत्यादि गणेशक ध्यान करथि) (५) तखन आनो प्रतिष्ठित स्त्री पुरुष सब बधूक माथ में सिन्दूर देथिन्ह (पहिठाम यद्यपि आशीर्वाद जानि पद्धति में पुरुष पद

(१) ओम् तन्नो अस्तुत्र्यायुषम् इति हृदि वरस्त्र्याऽयायुषङ्कुर्य्यात् (२) अनेनैव क्रमेण वधूललाटादावपि आचारात्सिन्दूरेण सह त्र्यायुषङ्कुर्य्यात् (३) तत्र तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते-इति विशेषः (४) तत आचारात् शमी शण शङ्ख सुवर्ण प्रेरितम्बधू शिरसि वरकर्त्तृकं सिन्दूर करणम् (५) ततोऽन्यैरपि प्रतिष्ठित स्त्रीपुंसैः सिन्दूरकरणम् [६] ग्राम्यवचनञ्चवरः कुर्य्यात् ग्राम्याः स्त्रियः [७] अथ वेदितो मण्डपमागत्य दूर्वाक्षतादिग्रहणम् [८] ततस्त्रिरात्रमक्षारलवणाशिनावधः शायिनौ निवृत्तमैथुनौचवधूवरौ भवतः [९] दक्षिणा- कुशत्रयतिलजलान्यादाय ओम् अद्य कृतैतद्विवाह कर्म्म प्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यक हिरण्यमग्निदैवतय्यँथा-नामगोत्रायब्राह्मणाय

उल्लेख अछि किन्तु केवल सुवासिनी (सधवा) सब सिन्दूर देथिन्ह (६) ग्रामीण स्त्री वर्गक प्रति ग्राम्यवचन (उहकन) वर करथि (७) एकर बाद वेदी सँ मण्डप में आवि दूर्वाक्षत दिआवथि (८) तखन तीनि राति नोन नहि खाथि भूमि में सूतथि मैथुन नहिं करथि पहि नियम सँ बधूवर रहथि (९) कर्म्म दक्षिणा वर करथि कुश तिल जल लय आइ ई जे विवाह कर्म्म कैल अछि तकर प्रतिष्ठाक हेतु एतवा द्रव्य मूल्यक [द्रव्य हाथ में नहि रहे तँ (यद्दीयमान मूल्यक पद कहवाक चाही) अग्नि देवताक सुवर्ण जे नाम जे गोत्र ब्राह्मण कें दक्षिणा हम दैत छिपैन्हि ॥

(१) एहि प्रकारें वर कर्म्म दक्षिणा देथिन्ह ॥ * ॥ * ॥ इति भसदं अड़ ग्रामावस्थितेन सोदरपुर वंशोद्भवेन पण्डित श्रीमदचम्भित मिश्रात्मजेन व्याकरणतीर्थेन पण्डित श्रीवल्लभद्र मिश्रेण कृता बा० विवाह पद्धति मिथिला भाषाटीका समाप्ता ॥ * ॥ * ॥ अथ चतुर्थी ॥ (२) तखन चारिम दिनक शेष राति में चतुर्थी कर्म्म करथि—चतुर्थी कर्म्म घरक भीतरहिं करथि तेल उटकन लगाय युग-काष्ठ (पाळो) पर वैशि स्नान कय पवित्र वस्त्र पहिरि घर जाय पूव मूहें कन्या वर वैसथि (३) तखन (कुशण्डिका कुश ओछाचथि (४) तकर क्रम कुश सँ एक हाथ नापल सरि भूमि कें बाढ़ि ताहि कुश कें ईशान कोण में त्याग कय गोवर जल सँ नोपि स्रुवक मूल सँ वा स्फ्य (एक हाथ नापल खड्गाकृति खैरक बनाओल शलाका) सँ उत्तर उत्तर क्रमें प्रादेशमात्र तीनि रेखा कय रेखाक

दक्षिणामहन्ददे (१) इति वरः कर्म्म दक्षिणान्दद्यात् ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ इति महामत्त सठक्कुर श्रीरामदत्त विरचिता बाजसनेयिनाम्बि-बाहपद्धतिः समाप्ता ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(२) ततश्चतुर्थ्यामपररात्रे चतुर्थी कर्म्म तच्च गृहाभ्यन्तर एव कार्य्यम् तैलोद्वर्त्तनादि कृत्वा युगकाष्ठे उपविश्य स्नात्वा शुचिवस्त्रम्परिधाय गृहम्प्रविश्य प्राङ्मुखौ बधूवरावुपविशतः (३) ततः कुशण्डिकारम्भः (४) तत्र क्रमः कुशैर्हस्तमात्र चतुरस्राम्भूमिम्परिसमुह्य तान् कुशानैशान्याम्परित्यज्य ❀गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन स्फ्येन वो त्तरोत्तरक्रमेण प्रादेशमात्रन्ति रुल्लिख्योल्लेखनक्रमेणानामि-काङ्गुष्ठाभ्याम्मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य [५] + कांस्यपात्रेणाग्निमादाय प्रत्यङ्मुखन्निदध्यात् [६] ततः पुष्पचन्दनताम्बूलवस्त्रा

क्रम सँ अनामिका तथा आँङुठ सँ माँटि फेकि जल सँ सिक्त कय (५) काँसाक पात्र द्वारा आगि लयपश्चिम मूहें राखथि (६ तखन फूल चानन पान वस्त्र लय ब्रह्माक वरण करथि

---

* गोमय इति। अमेध्य सेविनी वन्ध्यां प्रसूतानाञ्च गोमयम्। जीर्णायाश्चोपलेपार्थन्नाहर्त्तव्यं कदाचन। इन्द्रेण वज्राभिहतःपुरावृत्रो महासुरः। मेदसा तस्य संक्लिन्नातदर्थं मुपलिप्यते ॥

+ कपालैर्भिन्नपात्रैर्वा आयसैः गोमयेनच। नाग्निप्रणयनं कार्य्यं यजमानभयावहम्। त्वरयापुनरानीतो यजमानभयावहम्। तस्मात्शुभेन पात्रेण अविच्छिन्नाकृशम्बहु। अग्निप्रणयनं कार्य्यं यजमान सुखावहम् ॥ अग्निस्वरूपम्—सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षि शिरोमुखः। विश्वरूपोमहानग्निः प्रणीतः सर्व कर्म्मसु ॥

(१) आइ राति में करवाक जे अछि चतुर्थीक होम कर्म्म ताहि में कैल बिनु कैल देखब रूप ब्रह्माक कार्म करवाक हेतु अमुक गोत अमुक नामक ब्रह्मा अपनें कें एहि फूल चानन वस्त्र स ब्रह्माक हेतु हम वरण करैत छी। एहि प्रकारें ब्रह्माक वरण करथि (२) हम वृत्त छी ई ब्रह्मा वाजथि (३) तखन जे विहित कर्म्म हो से अपनें करू। ई वर वाजथि (४) हम करब ई कथा ब्रह्माक बजलाक बाद (५) अग्नि सँ दक्षिण दिशि शुद्ध आसन दय ताहि पर पूव अग्र कें कुश ओछाय अग्नि कें प्रदक्षिण कराय (६) एहि चतुर्थी कर्म्म में अपनें हमर ब्रह्मा होउ ई वाजि (७) हम

एयादाय (१) ओम् अस्यां रात्रौ कर्त्तव्य चतुर्थी होम कर्म्मणि कृताकृतावेक्षणरुपब्रह्मकर्म्मकर्त्तु ममुकगोत्रममुक शर्म्माणम्ब्राह्मणमेभिःपुः पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेनत्वामहम्वृणे। इतिब्रह्माणम्वृणुयात् (२) ओम् वृतोऽस्मीतिप्रतिवचनम् (३) ततः ओम् यथाविहितं कर्म्म कुरु। इति वरेणोक्ते (४) ओम् करवाणि। इतिब्रह्मप्रतिवचनानन्तरम् (५) वन्हेर्द*क्षिणतः शुद्धमासनन्दत्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य्याग्निप्रदक्षिणं कारयित्वा (६) ओम् अस्मिन् कर्म्मणित्वम्मे ब्रह्माभव इत्यभिधाय [७] ओम् भवानीतितेनोक्ते कल्पिताशने ब्रह्माणमुदङ्मुखमुपवेशयेत् [८] +अब्राह्मणपक्षे—ओम् अस्यांरात्रौ कर्त्तव्य चतुर्थी होम कर्म्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म्मकर्त्तु मस्मिन् कर्म्मणि त्वम्मेब्रह्मा

होएब ई कथा ब्रह्मा वाजथि तखन राखल आसन पर उत्तर मूहें ब्रह्मा कें वैसावथि (८) ब्रह्मा जँ नहिं रहथि तँ कुशक ब्रह्मा वनाय आइ राति में करवाक जे अछि चतुर्थी होम कर्म्म ताहि में कैल बिना कैल देखब रूप ब्रह्माक कर्म्म करवाक हेतु एहि कर्म्म में अपनें हमर ब्रह्मा होउ ॥

*दक्षिणान्दिशमश्रित्ययमो मृत्युश्चतिष्ठतः। तयोः संरक्षणार्थाय तस्माद्ब्रह्मा वहिर्वसेत्॥ +पञ्चाशता भवेद्ब्रह्मातदर्द्धेनतुविष्टरः। ऊर्ध्वकेशोभवेद्ब्रह्मा अधः केशस्तु विष्टरः। दक्षावर्त्तोभवेद्ब्रह्मा वामावर्त्तस्तु विष्टरः। केचित्तु यज्ञवास्तुनि मुष्ट्याश्चस्तम्बेदर्भवटौतथा। कुश संख्या न विहिता विष्टरास्तरणेष्वपि। इति—कात्यायनः। कुशाभावे त्रिभिरपि कुशैः कार्य्यः

(१) ई कथा वाज़ि कुशक वनाओल ब्रह्मा कें वैसावथि। वरण प्रति बचन इत्यादि नहिं करथि (२) तखन जल भरल माँटिक थैल अग्नि सँ उत्तर दिशि राखि—प्रणीता पात्र आगाँ में राखि ज़ल सँ पूर्ण कय कुश सँ झाँपि ब्रह्माक मुँह देखि अग्नि सँ उत्तर कुश पर राखथि (३) तखन कुश ओछावथि। सोलह कुश लय अग्नि कोण सँ ईशान कोण पर्य्यन्त सात कुश—ब्रह्मा सँ अग्नि पर्य्यन्त एक कुश नैऋति कोण सं वायव्य कोण पर्य्यन्त सात कुश अग्नि सं प्रणीता पर्य्यन्त एक कुश (४) तखन अग्नि सं उत्तर पश्चिम दिशि पैता कटवाक हेतु तीनि कुश.—पैता बनैवाक हेतु अग्रसहित अन्तरगर्भ होन दूइ टा कुशपत्र प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली सम्मर्जन कुश (६) वेणीरूप उपयमन कुश तीनिटा आमक काठी स्त्रुव घृत (२५६) दूइ शय छप्पन मुट्ठी आरव चाउर सं भरल

भव (१) इत्यभिधाय दर्भवटुमुपवेशयेत्। वरण प्रति बचनादीनिवर्ज्ज्यानि (२) ततः पृथूदपात्रमग्ने रुत्तरतः प्रतिष्ठाप्य प्रणीता पात्रम्पुरतः कृत्वा वारिणापरिपूर्य्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्याग्ने रुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्॥ (३) ततः परिस्तरणम् वर्हिष-श्चतुर्थभागमादायाग्नेया दीशानान्तम्ब्रह्मणोऽग्निपर्य्यन्तं नैऋताद्वायव्यान्तं-अग्नितः प्रणीता पर्य्यन्तम् (४) ततोऽग्ने रुत्तरतः पश्चिम दिशि पवित्र छेदनार्थं कुशत्रयं—पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भिकुशपत्रद्वयम् प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली सम्मार्जन कुशाः (५) वेणीरूपोपयमन कुशाः *समिधस्तिस्त्रः स्त्रुवः आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरमुष्टिशत द्वयावच्छिन्नामतण्डुलपूर्णपात्रम् चर्वर्थमामतण्डुलाः एतानि पवित्रछेदन कुशानाम्पूर्वपूर्वदिशिक्रमेणासादनीयानि [६] ततः

पूर्ण पात्र चरुक हेतु आरव चाउर ई सब पैता कटवाक कुश सँ पूव पूव दिशि क्रमहिं सं राखथि (७) तखन

समित्स्वरूपं चिन्तामणौ। समिधांलक्षणम्वक्ष्ये संख्या मासान्तथैवच। विशीर्णा विदला ह्रस्वा वक्रा स सुखिरा कृशा। अतिस्तूलातिदीर्घाच समित्काव्य विनाशिनी। विशीर्णायुःक्षयं कुर्य्यात् द्विदला पुत्र नाशिनी। प्रादेशान्नाधिका नोना समिरस्यात्सर्वकर्म्मणि। ह्रस्वामृत्युकरी रौद्री दुर्भगत्वश्चवक्रया। विघ्नानिकुरुतेस्थूला कृशार्चारिपुवर्द्धिनी। द्विधानाशयतेह्यर्थं भार्य्याश्चप्रियबान्धवान्। कीटदष्टाति भयदादीर्घांचैवसुतान् हरेत्। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वर्ज्जनीयाश्चवर्जयेत्। प्रागग्रासमिधादेयाः पुष्ट्यर्थञ्च विजानता। शान्त्यर्थे बुसशल्कार्द्रा विपरीता जिघांसता। दीर्घास्थूलाघुणै-र्य्युष्टा कर्म्मसिद्धि विनाशकाः। अश्वत्थौदुम्बरौविल्वश्चन्दनं सरलस्तथा। शालश्चदेवदारुश्च खादिरश्चेतियाज्ञिकाः। नाङ्गुष्ठादधिकाग्राह्या समित्स्थूलतमाक्वचित्। न विमुक्तत्वचाग्राह्यानसकीटा नपाटिता। प्रादेशान्नाधिका नोना नतथास्याद्विशाखिका। न सपर्णा न निर्वीर्य्या होमेषुच विजानता॥ विशाखिका विविधशाखायुक्ता। निर्वीर्य्या निःसारा। सशल्काः सत्वचः॥

(१) पैता काटेक कुश सँ अपन प्रादेश नापल पैता काटि प्रणीता पातक जल तीनि बेरि पैता हाथमें लय प्रोक्षणी पातमें दय दुनू अनामिका ओ आंगुठ सँ उत्तर अग्रके पैता पकड़ि तीनि बेरि उत्पवन (माथपर छिटथि) (२) तखन प्रोक्षणी पात बाम हाथ में लय दहिन हाथक अनामिका ओ आंगुठ सँ पैता पकड़ि प्रोक्षणी पातक जल तीनि बेरि माथपर छिटथि प्रणीता पातक जल सँ प्रोक्षणी पात कें सिक्त करथि, प्रोक्षणीपातक जल सं राखल वस्तु सिक्त करथि (३) तखन अग्नि सं उत्तर दिशि प्रणीतापात सं दक्षिण दिशि प्रोक्षणीपात राखथि (४) एकर बाद आज्यस्थाली में घृत राखथि। प्रणीतापातक जल किञ्चित् चरुमें दय प्रणीतापातक जल सं अक्षत कें तीनि बेरि धुआय चरु में देथि (५) वर अपनें चरु लेथि ब्रह्मा घृत लेथि अग्नि में उत्तर दिशि सं चरु तथा दक्षिण

(१) पवित्र छेदन कुशैः स्वप्रादेशमितपवित्रे छित्वा प्रणीतोदकन्त्रिः प्रोक्षणीपात्रे सपवित्रे करेण निधाय द्वाभ्यामनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् (२) ततः प्रोक्षणीपात्रम्वामहस्तेनादायानामिकाङ्गुष्ठाभ्याम्पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुदिङ्गनम् प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्प्रोक्षणी जलेनासादितवस्तुसेचनम् (३) ततोऽग्नेरुत्तरतः प्रणीता दक्षिण दिशि प्रोक्षणीपात्रन्निदध्यात् [४] अथाज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। प्रणीता जलंकिञ्चिच्चरौदत्वा प्रणीताजलेन तण्डुलान्त्रिः प्रक्षाल्यचरौक्षिपेत् (५) स्वयञ्चरुं गृहीत्वा ब्रह्मणा चाज्यमग्नेरुत्तरतश्चरुदक्षिणत आज्यन्निदध्यात् [६] ततो ज्वलत्तृणमादाय हविर्द्वयोपरि प्रदक्षिणम्भ्रामयित्वाग्नौतत्प्रक्षेपः [७] श्रृतेचरौवारत्रयं स्रुवप्रतपनम्। [८] सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवंसम्मृज्यप्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य स्वदक्षिणतः कुशोपरिनिदध्यात्

दिशि सं घृत राखथि (६) तखन प्रज्वलित काठी लय दोनों हवि पर प्रदक्षिण क्रम सं भ्रमण कराय अग्नि में ताहि काठी कें दय देथि (७) चरु सिद्ध भेला सं तीनि बेरि स्रुवकें अग्नि में सेदथि (८) बाढ़ेक कुशक अग्र सँ अन्तर एवं मूल सँ बाहार स्रुवकें झाड़ि प्रणीतापातक जल सँ सिक्त कय फेरु तीनि बेरि सेदि कें अपना सं दक्षिण दिशि कुश पर राखथि

स्रुवधारणं। सच चतुराङ्गुलस्त्यक्त्वाशंखमुद्रयाधार्यः। मत्स्यपुराणम्। मूले हानिकरम्प्रोक्तम्मध्ये शोक करन्तथा। अग्रे व्याधिकरम्प्रोक्तं श्रुवन्धारयते कथम्। कनिष्ठांगुलिमानेन चतुर्विंशतिकाङ्गुलिम्। चतुरङ्गुलम्परित्यज्य अग्रे चैवद्विरष्टकम्। चतुरङ्गुलेच तन्मध्येधारयेच्छङ्खमुद्रया। हीयते यजमानो वै श्रुवमूलस्य दर्शनात्। तस्मात् सङ्गोपयेन्मूलं होम काले श्रुवस्यतु। श्रुवस्वरूपं चादिदोषाथ पार्णोवाद्विवितस्ति स्रुवः स्मृतः। स्रुग्वाहुमात्रो विज्ञेयाव्रृत्तस्तु प्रग्रहस्तयोः। पार्णः पालाशः॥

(१) तखन घृत अग्नि में चरुक पूर्वदिशि सँ आनि आगाँ में राखि, तथा पश्चिम दिशि सँ चरु आनि घृतक उत्तर दिशि राखथि (२) तखन तीनि बेरि प्रोक्षणीपात्र जकाँ घृतक उत्पवन करथि (माँथपर छिटथि) देखि कें जँ कोनो अधलाह वस्तु रहैक तँ से बाहार कय देथिन्ह (३) तखन पहिनहिं जकाँ प्रोक्षणीपात्रक उत्पवन करथि (४) तखन उपयमन (वेणी) कुश बाँम हाथ कें लेथि प्रजापति कें मन सँ ध्यान कय ठाढ़भय घृत लागल काठी विना मन्त्रहिं अग्नि में देथि (५) बैसिकें पैता हाथ में लय प्रोक्षणीपात्रक जल सँ अग्नि कें सिक्त कय प्रणीतापात्र में पैता राखि ब्रह्मापर्य्यन्त एक कुश राखथि (६) दहिन जाँघ खसाय खूब धधकल अग्नि में होम करथि (७) ताहि ठाम आघार सँ आरम्भकय चारि आहुतिपर्य्यन्त हवनक शेष घृत प्रोक्षणीपात्र में राखथि (८) हम प्रजापतिक निमित्त हवन दैत छिएन्हि तें हेतु ई घृत प्रजापति कें प्राप्ति होउन्ह। ई मनसा नामक होम भेल (९) इन्द्रप्रसन्न होथि तें हेतु ई घृत इन्द्र कें प्राप्ति होउन्ह ई आघार नामक

(१) तत आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वक्रमेणानीयाग्रे धृत्वा पश्चिमेन चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात् (२) ततो वारत्रयम्प्रोक्षणी-वदाज्यस्योत्पवनमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम् (३) ततः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनम् (४) तत उपयमन कुशान् वामहस्तेनादाय प्रजापतिम्मनसाध्यात्वा उत्तिष्ठन् घृताक्तास्समिधस्तूष्णीमग्नौक्षिपेत् (५) तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेनाग्निम्पर्य्युक्ष्यप्रणीतापात्रे पवित्रे धृत्वा ब्राह्मणान्वारब्धः [६] पातितदक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतिर्जुहुयात् (७) तत्राघारादारभ्याहुति-चतुष्टये हुतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः [८] ओम् प्रजापतये स्वाहा-इदम्प्रजापतये-इति मनसा [९] ओम् इन्द्रायस्वाहा-इदमिन्द्राय इत्याघारौ (१०) ओम् अग्नये स्वाहा इदमग्नये (११) ओम् सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय-इत्याज्य भागौ (१२) तत आज्याहुतिपञ्चतये स्थालीपाकाहुतौच

होम भेल (१०) अग्नि प्रसन्न होथि तें हेतु ई घृत अग्नि कें प्राप्ति होउन्ह (११) चन्द्रमा प्रसन्न होथि तें ई घृत चन्द्रमा के प्राप्ति होउन्ह-ई दूनू आज्य भाग भेल (१२) तखन पाँचबेरि घृतक आहुति ओ स्थालीपाकक आहुति केर शेष—

समिद्धतमेऽग्नौजुहुयात् इति। क्रोधादिना होमो न कार्य्यः साम्बपुराणे। क्षुत्त ड्क्रोधत्वरायुक्तो हीन मन्त्रैर्जुहोतियः। अप्रवृद्धे सधूमेऽग्नौसोऽन्धः स्यादन्यजन्मनि। अल्पे रुक्षे सस्फुलिङ्गे वामावर्त्ते भयानकें। आर्द्रकाष्ठैरसम्पूर्णे फूत्कार वतिपावके। कृष्णार्चिषिसुदुर्गन्धेतथालिहत मेदोनीम्। आहुतीर्ज्जूहुयाद्यस्तु तस्य नाशो भवेद्ध्रुवम्। योऽनर्चिषिजुहोत्यग्नौव्यङ्गारिणिच मानवः। मन्दाग्निवानज्ञावी च दरिद्रश्चाभिजायते। तस्मात्समिद्धे होतव्यन्नासमिद्धे कथञ्चन। आरोग्यमिच्छतायुश्च श्रियमात्यन्तिकीतथा। बर्हिध्मानन्तु मुखेनैव। नकुर्य्यादग्निधमनं पाणिना व्यजनेन वा। मुखेनैव धमेदग्निं मुखादेषोऽध्यजायत इति॥ कात्यानः॥

(१) पहिनहिं सँ राखल माटिक कलशमें ताहि ताहि आहुति क बाद स्रुव मे राखल हवनक शेष घृत कें प्रोक्षणीपात्र में राखथि—पाँच आहुति पर्य्यन्त अन्वारम्भ नहिं राखथि (२) हे सब पाप नाश कैनिहार अग्नि ? अपनें इन्द्र आदि देवता सबहिंक पाप नाश कैनिहार थिकहुं ते हेतु यज्ञ कैनिहार ब्राह्मण हम विवाहरूप यज्ञक हेतु अपनेक शरण में आएल छी एहि स्त्री कें स्वामी मारवाक जे लक्षण देह में छन्हि से अपनें नाश करिऔन्हि तें हेतु ई घृत अपनें कें दैत छी (३) हे वायु ? अपनें देवता सबहिंक पाप नाश कैनिहार थिकहुं तें हेतु यज्ञ कैनिहार ब्राह्मण हम विवाहरूप यज्ञक हेतु अपन क शरणमें आएल छी एहि स्त्री कें निपुत्रक जे लक्षण देह में छन्हि से अपनें नाश करिऔन ते हेतु ई घृत अपनेंकें दैत छो (४) हे सब दोष नाश कैनिहार सूर्य्य अपनें देवता सबहिंक

[१] पूर्वोपकल्पित पृथूदपात्रे तत्तदाहूत्यनन्तरं स्रुवावस्थित हुतशेषस्य घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः आहुतिपञ्चतये नान्वारब्धः (२) ओम् अग्ने प्रायश्चित्ते त्वन्देवानाम्प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामियाऽस्यैपतिघ्नीस्तनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा-इदमग्नये [३] ओम् वायोप्रायश्चित्ते त्वन्देवानाम्प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामियाऽस्यै प्रजाघ्नीस्तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदम्वायवे (४) ओम् सूर्य्यप्रायश्चित्तेत्वन्देवानाम्प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथ काम उपधावामियाऽस्यै पशुघ्नीस्तनूस्तामस्यै नाशयस्वाहा—इदं सूर्य्याय [५] ओम् चन्द्रप्रायश्चित्तेत्वन्देवानाम्प्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथ कामउपधावामियाऽस्यैगृहघ्नीस्तनूस्तामस्यैनाशय स्वाहा—इदञ्चन्द्रमसे (६) ओम् गन्धर्वप्रायश्चित्तेत्वन्देवानाम्प्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामि

दोष नाश कैनिहार थिकहुं तें हेतु यज्ञ कैनिहार ब्राह्मण हम विवाहरूप यज्ञक हेतु अपनेंक शरण में आएल छी एहि स्त्रीकें पशु मारवाक जे लक्षण देह में छैन्हि से अपनें नाश करिऔन्हि तें हेतु ई घृत अपनें कें दैत छी (५) हे सब दोष नाश कैनिहार चन्द्रमा—अपनें देवता सबहिंक दोष नाश कैनिहार थिकहुं तें हेतु यज्ञ कैनिहार ब्राह्मण हम विवाह रूप यज्ञक हेतु अपनेंक शरण में आएलछी एहि स्त्रीं कें घर नाश करवाक जे लक्षण देह में छन्हि से अपनें नाश करिऔन्हि तें हेतु ई घृत अपनें कें दैत छी (६) हे सब दोष नाश कैनिहार गन्धर्व ? अपनें देवता सबहिंक दोष नाश कैनिहार थिकहं तें हेतु यज्ञ कैनिहार ब्राह्मण हम बिबाहरूप यज्ञक हेतु अपनेंक शरण में आएल छी।

(१) एहि स्त्रीके यश नाश करवाक जे लक्षण देह में रहन्हि से अपने नाश करिऔन्हि तें हेतु ई घृत अपने कें दैत छी (२) तखन स्थालीपाक सँ हवन करथि (३) प्रजापति हमरा कल्याण करथु तें हेतु ई घृत प्रजापति कें दैत छिऐन्हि। ई मनसा नामक होम भेल (४) अग्रिम नवो आहुति पर्य्यन्त ताहि ताहि आहुतिक बाद स्रुव में राखल हवनक शेष घृत कें प्रोक्षणीपात्र मे प्रक्षेप करथि (५) ताहि ठाम ब्रह्मा सँ अन्वारम्भ कय घृत तथा स्थालीपाक सँ स्विष्टकृत होम करथि (६) अग्नि हमर मनोरथसिद्ध करथि तें हेतु मनोरथ सिद्ध कैनिहार अग्नि कें ई आहुति दैत छिऐन्हि (७) तखन घृत सँ होम करथि। पृथ्वी हमर दूनू व्यक्तिक कल्याण करथु तें हेतु ई आहुति पृथ्वी कें दैत छिऐन्हि। स्वर्ग दूनू व्यक्तिक कल्याण करथु तें हेतु ई आहुतिस्वर्ग कें दैत छिऐन्हि। आकाश दूनू व्यक्तिक कल्याण करथु तें हेतु ई आहुति आकाश के दैत छिऐन्हि। ई सब महाव्याहृति होम भेल (८) हे अग्नि? अपने हमर कर्म्मक साक्षी थिकहु सब जानैतहुँछी तें हेतु एहि कर्म्म में न्यूनाधिक दोष सँ जे राजावरुण कें हमर प्रति क्रोध भेल छैन्हि ताहि क्रोध के अपने शान्ति करिऐन्हि तथा सब संसारमय ओ यज्ञ मे श्रेष्ठ तथा हवन लेवा में श्रेष्ठ अति से तेज़स्वी अपने हमर दुर्भाग्यक से हो नाश करु तें हेतु ई आहुति अपने कें ओ वरुण कें दैत छी (९) हे अग्नि? सततपालन करवा में सावधान तथा शूर जे अपने से एहिठाम आबि एहि काल में हमर रक्षा करु तथा राज़ा वरुण कें प्रसन्न करु हमर आहुति ग्रहण करु हवि भोजन करु तें हेतु ई आहुति अपने कें तथा राजा वरुण कें दैत छी।

(१) याऽस्यैयशोघ्नीस्तनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा-इदं गन्धर्वाय (२) ततः स्थालीपाकेनजुहोति (३) ओम् प्रजापतये स्वाहा-इदम्प्रजापतये-इतिमनसा (४) अग्रिमाहुतिनवकेतत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थित हुतशेषस्यघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः (५) तत्र ब्रह्मणान्वारब्धेनाज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः (६) ओम् अग्नये स्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते (७) तत आज्येन। ओम् भूः स्वाहा-इदम्भूः। ओम् भुवःस्वाहा-इदम्भुवः। ओम स्वःस्वाहा इदं स्वः। एतामहाव्याहृतयः [८] ओम् त्वन्नोऽग्ने वरुणस्यविद्वान्देवस्य हेड़ो अवयासिसीष्ठा। यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा—इदमग्नी वरुणाभ्याम् [९] ओम् सत्वन्नोऽग्ने ऽवमोभवोतीनेदिष्ठो अस्याउषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनोवरुणꣳरराणोवीहिमृड़ोꣳसुहवोन एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥

आज्यस्थाली तैजसीमृन्मयी वा द्वादशाङ्गुल वितता प्रादेशोच्चाकार्य्या। आज्यस्थालीतु कर्त्तव्या तैजसद्रव्यसम्भवा। माहेयीवापि कर्त्तव्या नित्यं सर्वाग्नि कर्म्मसु। इति कात्यायनः॥ चरुस्थाली। तिर्य्यगूर्ध्वं समिन्मात्री दृढ़ानातिवृहन्मुखी। मृन्मय्यौदुम्बरी वापि चरुस्थाली प्रकीर्त्तिता। समिन्मात्रीद्वादशाङ्गुल प्रमाणा औदुम्बरीताम्रमयी। इति कात्यायनः

(१) हे अग्नि ? जे व्यक्ति अपनें सँ रक्षाक प्रार्थना नहिं करैत छथि हुनको अपनें रक्षा करैत छी तथा सब प्राणोक शुभ कैनिहार थिकहुं तें हेतु अपनें आउ आविकें हमर आहुति ग्रहण करू तथा देवता सब कें ई आहुति प्राप्ति कराउ अपनें सत्यकें जननिहार थिकहुं संसार सँ उद्धार होवाक उपाय जानैत छो हमरो सब वस्तु औषध हो तें हेतु ई आहुति अपनें कें दैत छी (२) हे वरुण ? अपनेक जे यज्ञ सँ उत्पन्न भेल सब लोक में व्याप्त बहुत पैघ पाश अछि ताहि पाश सँ आइ सूर्य्य तथा विष्णु विश्वेदेव ओ वायु ओ बारहो आदित्य ई सब एहि यज्ञ में जे कोनों प्रमाद सँ त्रुटि भेल हो तकरा एहि आहुंति सँ सन्तुष्टभय हमर रक्षा करथु तें हेतु ई आहुति वरुण सूर्य्य विष्णु विश्वेदेव वायु तथा बारहो आदित्य कें दैत छिऐन्हि (३) हे बरुण ? अपनेंक जे उत्तम मध्यम अधम पाश

(१) ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्चसत्वमित्वमयाअसि । अयानोयज्ञम्वहास्ययानोधेहिभेषजॅं स्वाहा-इदमग्नये (२) ओम् येतेशतम्वरुणये सहस्रय्यँज्ञियाःपाशावितताममहान्तस्तेभिर्नो अद्य सवितोतविष्णु र्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतःस्वर्क्काःस्वाहा । इदम्वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यः (३) ओम् उदुत्तमम्वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमॅं श्रथाय अथावय मादित्यव्रते तवानागसोअदितये स्याम स्वाहा-इदम्वरुणाय [४] इतिसर्वप्रायश्चित्तम् [५] ओम् प्रजापतये स्वाहा इदम्प्रजापतये इति मनसा । इति प्राजापत्यम् [६] ततः संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य [७] ओम् अस्यांराचौकृतैतच्चतुर्थीहोमकर्म्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म्म प्रतिष्ठार्थमिदम्पूर्णपात्रम्प्रजापति दैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणान्तुभ्यमहंसम्प्रददे ८ ओम् स्वस्तीतिप्रतिबचनम् ६ ततोऽग्निप्रदक्षिणक्रमेणहस्त ग्रीत्वा ब्रह्मोत्थापनम्

अछि ताहि सँ हमरा छोड़ाउ ज़ाहि सँ हम अनपराधीभय अपनेंक पूजा करवा में दीन नहिं होइ से करु तें हेतु ई आहुति अपनें कें दैत छी (४) : सकल प्रायश्चित्त होम भेल (५) प्रजापति सन्तुष्ट होथि तें ई आहुति प्रजापति कें दैत छिऐन्हि—ई मनसा नामक होम भेल (६) तखन प्रोक्षणी पात्र में राखल हवनक शेष घृत प्राशन करथि। तखन आचमन कय (७) आइ राति में कैल जे अछि —चतुर्थी कर्म्म ताहि में कैल बिनु कैल देखब रूप कर्म्मक प्रतिष्ठा (संस्कार) क हेतु प्रजापति देवताक ई पूर्णापात्र अमुकगोत्र अमुक नामक ब्राह्मण ब्रह्मा अपनें कें दक्षिणा हम दैत छी (८) हम लेल ई कथा ब्रह्मा बाजाथि (९) तखन अग्निक प्रदक्षिण क क्रम सं हाथ पकड़ि ब्रह्मा कें उठावथि॥

(१) ब्राह्मण ब्रह्मा जँ नहि रहथि तखन ॥ आइ राति में ई जे चतुर्थी कर्म्म कैल अछि ताहि में कैल विना कैल देखब रूप ब्रह्माक कर्म्मक संस्कार क हेतु प्रजापति देवताक ई पूर्णपात्र ब्रह्मा कें दक्षिणा दय प्रणाम करैत छी (२) ब्रह्मागेंठ खोलि देथिन्ह (३) तखन जल हमरा सुन्दर मित्र जकाँ औषध होथि (४) एहि मन्त्रें दूनू पैता सँ जल माँथपर छिटथि (५) जे हमर द्वेष करैत छथि वा जनिक हम द्वेष करैत छिएन्हि हुनका ई जल शत्रु होथिन्ह (६) एहि मन्त्रें प्रणीता पात्र कें ईशान कोण में उनटाय देथि (७) तखन ओछैवाक क्रम सँ कुश सब लय चीड़ी बनाय घृत

(१) अब्राह्मणपक्षे ओम् अस्यांरात्रौकृतैत चतुर्थी होम कर्म्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म्मप्रतिष्ठार्थमिदम्पूर्णपात्रम्प्रजापतिदैवतम्ब्रह्मणेदक्षिणान्नमः (२) ब्रह्मग्रन्थिविमोकश्च (३) ततः ओम् सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु (४) इति पवित्राभ्यां शिरः सम्मृज्य (५) ओम् दुर्म्मित्रियास्तस्मैसन्तु योऽस्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्मः (६) इत्यैशान्याम्प्रणीतान्युब्जीकरणम् (७) ततः स्तरणक्रमेणवर्हिरानीय घृतेनाभिघार्य्यहस्तेनैवजुहुयात् [८] ओम् देवागातुविदोगातुम्बित्वागातुमित। मनसस्पत इमन्देव यज्ञꣳ स्वाहा वातेऽधाःस्वाहा-इति मन्त्रेण [६] ततः पृथूदपात्रस्थजलमाम्रपल्लवेनानीय वरोमूर्ध्नि वधूमभिषिञ्चति १० ओम् याते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दितातनूर्जारघ्नीन्ततएनाङ्करोमि सा जीर्जत्वम्मयासह श्री अमुक देवि ? इति मन्त्रेण।

लगाय कें हाथहि सँ अग्नि में देथि (८) हे यज्ञ कें ज़ननिहार देवता सब ? एहि यज्ञ कें जानि आन यज्ञक हेतु अपनें सब जाउ। हे देव चन्द्रमा ? एहि यज्ञ कें वायु में स्थिर करु। एहि मन्त्र सँ (९) तखन कलशक जल आमक पल्लव सें लय वधूक माथपर वर छिटथि (१०) हे अमुक देवि ? अहाँक देह में स्वामीघातक सन्तानघातक पशु घातक गृहघातक यश घातक आयु घातक जे लक्षण अछि तकरा हम फराक करैत छी से अहाँ हमरा सङ्ग चिरजीविनी होउ। एहि मन्त्र सँ

(१) तखन वर वधू कें स्थालीपाक प्राशन करावथि (२) हे सुन्दरि ! अहांक प्राणक सङ्ग हम अपन प्राण कें मिलाबैत छी (३) अहांक अस्थिक सङ्ग हम अपन अस्थि कें मिलावैत छी (४) अहांक मांसक सङ्ग हम अपन मांस कें मिलावैत छी . (५) अहांक चर्म्मक सङ्ग हम अपन चर्म्म कें मिलावैत छी (६) एहि चारियो मन्त्र सं सब मन्त्रक अन्त में प्राशन करावथि (७) तखन हाथ धोय आचमन कय बधूक हृदय छूबि वर मन्त्र पढ़थि (८) हे सुन्दर अवयववाली ? एतवा दिन जे अहांक हृदय चन्द्रमागन्धर्व अग्नि कें स्वामी बुझैत रहे से आव हमरा स्वामी बुझयु, हम दूनू गोटें प्रसन्न सं सय वर्ष सब देखव सय वर्ष ज़ीव सय वर्ष सब शूनव। एहि मन्त्र सं (९) एकर बाद कङ्कण खोलि देथि। जन्म गेंठ लोक व्यवहार सं खोलथि (१०) तखन ठाढ़ भय वधू

[१] ततोबधूम्वरः स्थालीपाकम्प्राशयति (२) ओम् प्राणैस्ते प्राणान् सन्दधामि (३) ओमृअस्थिभिस्ते अस्थीनिसन्दधामि (४) ओम् माꣳसैस्ते माꣳसानिसन्दधामि (५) ओंम् त्वचातेत्वचꣳसन्दधामि (६) इतिमन्त्र चतुष्टयेन प्रतिमन्त्रान्ते प्राशनम् (७) ततो हस्तम्प्रक्षाल्याचम्य वधूहृदयंस्पृष्ट्वा वरः पठति (८) ओम् यत्ते सुसीमेहृदयन्दिविचन्द्रमसि श्रितम्। वेदा हन्तन्मान्तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतम्-इति मन्त्रेण (९) अथ कङ्कणमोक्षणम्-जन्मग्रन्थि विमोकादीन्याचार परिप्राप्तानि [१०] तत उत्थाय वधूदक्षिणहस्तस्पृष्ट घृत पुःप फलपूर्ण स्रुवेण [११] ओंमूर्द्धानन्दिवो अरतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृत आजातमग्निं कविꣳसम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाःस्वाहा। इति मन्त्रेणपूर्णाहुतिन्दद्यात् (१२) तत उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रहीत भस्मना (१३) ओम् त्र्यायुषञ्जमदग्नेः-इति ललाटे।

सं दहिन हाथ धराय घृत फूल फल स्रुव में लय (११) स्वर्ग लोकक माँथ जकां उच्चास्थान आकाश में सूर्य्यरूप सं दीप्यमान, दाहादि सं सम्पूर्ण संसार में व्याप्त, सकल संसारक हित, बन में उत्पन्न, अपन भक्तपर दयालु, अत्यन्त तेज़स्वी, यजमान सबहिंक अभ्यागत, देवता सबहिंक मुख, अग्नि कें देवता सब उत्पन्न कैलन्हि, ताहि अग्नि कें बल पूर्णक हेतु ई घृत दैत छिपेन्हि॥ एहि मन्त्र सं पूर्णाहुति देथि (१२) तखन बैसिकें स्रुवपर दहिन अनामिका सं भस्मलय (१३) जमदग्नि मुनिक बाल्य युवा वृद्ध तीनो अवस्थाक आयु हमरा हो। एहि मन्त्रें कपारमें लगावथि॥

(१) कश्यप मुनिक बाल्य युवा वृद्ध तीनों अवस्थाक आयु हमरा हो ॥ एहि मन्त्रे गर में लगावथि (२) देवता सबहिंक तीनों अवस्थाक आयु हमरा हो। एहि मन्त्रें दहिन बाँहुक मूल में लगावथि (३) ओ तीनों अवस्थाक आयु हमरा हो एहि मन्त्रें हृदय में लगावथि (४) एहि क्रम सँ वधूक कपार इत्यादि में, भस्ममें सिन्दूर मिलाय कें लगावथि (३) वधूक बेरि (ओम् तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्) एतवा विशेष। (६) कुश तिल जल हाथ में लय॥ कर्म्मदक्षिणा वर करथि॥ आइ राति कैल जे अछिचतुर्थी कर्म्म तकर प्रतिष्ठाक हेतु एतवा द्रव्य मूल्यक अग्नि देवताक सुवर्ण यथा नामगोत्र ब्राह्मण कें दक्षिणा हम दैत छियैन्हि॥ एहि तरहें कर्म्मदक्षिणादय देथिन्ह॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

[१] ओम् कश्यपस्यत्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम् [२] ओम् यद्देवेषुत्र्यायुषम् इति दक्षिणबाहुमूले [३] ओम् तन्नोअस्तु त्र्यायुषम् इति हृदित्र्यायुषङ्कुर्य्यात् (४) अनेनैव क्रमेणवधूललाटादावपि सिन्दूरेणसहत्र्यायुषङ्कारयेत् (५) तत्र तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते-इति विशेषः (६) कुशत्रयतिलजलान्यादाय। ओम् अस्यांरात्रौ कृतैतच्चतुर्थीकर्म्मप्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यकहिरण्य मग्निदैवतय्यँथानामगोत्राय ब्राह्मणायदक्षिणा महन्ददे। इति वरः कर्म्मदक्षिणान्दद्यात् ॥ ❁ ॥ * ॥ ❁ ॥ ❁ ॥
इति चतुर्थी कर्म्म समाप्तम् ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

अथेयस्वाजसनेयिविवाह चतुर्थीकर्म्मपद्धतिः पूर्णियां मण्डलान्तर्गत भसदीअड़ ग्राम निवासिना सोदरपुर वंशोद्भवेन पण्डित श्रीअचम्भित मिश्र तनूजेन परिहारी दुःखमोचन श्रीराम मन्दिर संस्कृत पाठशालाध्यापकेन व्याकरण तीर्थेन पण्डित श्रीवलभद्र मिश्रेण स्वकृतया मन्त्रार्थबोधिका मिथिला भाषाटीकया समलंकृत्य कोईलखग्रामनिवासि ज्योतिर्विच्छ्री श्रीनन्दन शर्म्मद्वारेण संशोध्य स्वहस्तेन विलिख्य वनैलो राजकुमार श्रीमद्रमानन्द सिंह बहादुराज्ञया तद्द्रव्य व्ययेनच पूर्णियां श्रीभागवत नारायण "दी ग्रैण्ड प्रिन्टिङ्ग यन्त्रालये" मुद्रापयित्वा प्रकाशिताच। अस्य पुनर्म्मुद्रणादिकं सम्पादकेन स्वायत्ती कृत मत्र मतिवैकल्यात्कण्टकादि दोषाच्च यदशुद्धादिकन्तद्विद्वन्निजगुणेन क्षन्तव्य मित्यभ्यर्थना॥ इति वैशाख कृष्ण तृतीयायां शुक्रे सन १३३६ साल।

वा० विवाह रत्नम्

शुद्धि पत्र मिदम् ।

अशुद्धम्	शुद्धम्	प०	पृ०	पं०
शन्याम्	शून्याम्	१	१	३
प्रास्यति	प्रदास्यति	१	२	१
कयाभ्	कन्याम्	१	२	१
गहित्वा	गृहित्वा	१	२	२
भवन्तभ्	भवन्तम्	१	२	६
अवाप्रवानि	अवाप्नवानि	२	२	३
परमेणा	परमेण	३	२	१
मधुपक्क	मधुपर्कं	३	२	२
स्पष्ट्वा	स्पृष्ट्वा	३	२	५
प्रवरश्य	प्रवरस्य	५	१	२
पत्नीन्ये	पत्नीत्वे	५	२	२

अशुद्धम्	शुद्धम्	प०	पृ०	पं०
बचनम	बचनम्	६	२	२
अनन्त: गार्भि	अनन्तगर्भि	७	१	१
प्रोक्षणन्	प्रोक्षणम्	७	१	५
पनस्त्रिः	पुनस्त्रिः	७	२	२
प्तव्य	प्रतव्य	७	२	२
समिधम्	समिधस्	७	२	२
द्वोषा	द्वेषा	८	१	४
सुषुरुणय	सुषुरुणाय	९	१	१
स्राहा	स्वाहा	९	१	२
ऊर्भ्यः	ऊगर्भ्यः	९	१	४
स्तावा	स्तावा	९	१	६

अशुद्धम्	शुद्धन्	प०	पृ०	पं०
द्रर्शाय	दर्शाय	९	२	६
सम्राज्य	साम्राज्य	११	१	४
घोरहं	घौरहं	१३	१	३
वधू	वधृ	१३	२	५
आपा	आपो	१४	२	२
हाम	होम	१५	२	२
लात् यायुषं	त् यायुषं	१	२	१
याकेन	पाकेन	२०	१	१
भू	भूः	२०	१	४
कूर्य्यात्	कुर्य्यात्	२२	१	२
कम्म	कर्म्म	२२	१	४

टिप्पणी—

अहतवस्त्रवेष्टित तृणपूरक इति—सकृद्धौतन्नवं श्वेतं सदसर्य्यन्न धारितम् । अहतन्तद्विजानीयात्सर्वकर्म्मसु पावनम् ॥ तृण इति—कुशः प्रादेशमात्रस्तुदर्भस्तुद्विगुणः स्मृतः । हस्तमात्रन्तुवर्हिः स्यात्तदूर्ध्वन्तृणमुच्यते ।
प० ६ छ० १ पं० ६

इति—पं० श्रीवलभद्र मिश्र कृता मन्त्रार्थवोधिनी मिथिलाभाषाटीकासमलङ्कृता
वाजसनेयिविवाहचतुर्थीकर्म्मपद्धतिः समाप्ता ।

पुस्तक प्राप्ति स्थानम् —

प्रथमवार २०००

बाबू श्रीकृष्णमोहन मिश्र, ग्राम भसदीअड़, पो० गुरुबाज़ार, जि० पुर्णियां ।

Printed by—Bhagwat Narain Sinha—At The Grand Printing Works Purnea City—